RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

06
खुशी और शांति जो हम बाहर ढूढ़ रहे हैं वो...

13
ब्रह्माकुमारी बहनों ने राष्ट्रपति से की मुलाकात...

वर्ष ▸ 09 | अंक ▸ 12 | हिन्दी (मासिक) | दिसंबर ▸ 2022 | पृष्ठ ▸ 16 मूल्य ▸ ₹ 12.50

वार्षिकोत्सव ▸ ब्रह्माकुमारीज के 85वें वार्षिकोत्सव में पहुंचे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

सही शिक्षा, सही सोच और सही ज्ञान ही हमें ताकत दे सकता है
-उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

सशक्त, समृद्ध और स्वर्णिम भारत की ओर विषय पर

उपराष्ट्रपति बोले- ब्रह्माकुमारीज ने जो विजन बनाया है मैं उसे सैल्यूट करता हूं, यहां आकर भारतीय दर्शन की सोच के दर्शन होते हैं...

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

आबू रोड/राजस्थान (निप्र)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के 85वें वार्षिकोत्सव समारोह में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, धर्मपत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ ने विशेष रूप से शिरकत की। उन्होंने दीप प्रज्जवलन कर वार्षिकोत्सव का शुभारंभ किया। सशक्त, समृद्ध और स्वर्णिम भारत विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जो विश्व के कल्याण की बात कर रहा है। भारत विश्वगुरु था और फिर से एक दिन निश्चित रूप से विश्व गुरु बनेगा। जिसका हमने सपना देखा था वह जल्द ही साकार होगा। हमारी शैक्षणिक संस्थाओं ने दुनिया का मार्ग प्रशस्त किया है। दुनिया के इतिहास में सच्चाई और शांति का संदेश देने वाला भारत के अलावा और कोई राष्ट्र नहीं है। आज भारत बदल रहा है। दुनिया भारत का लोहा मान रही है। भारतीय होना अपने आप में गर्व और शान की बात है। भारत आज किसी का मोहताज नहीं है।

हमने दुनिया के सबसे बड़े संकट में भी मूल्य नहीं खोए

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े संकट कोरोनाकाल में भी भारत ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों का ध्यान रखते हुए पूरी दुनिया की सेवा की। भारत ने दुनिया के सामने वह कर दिखाया है जिसकी कोई कल्पना कर नहीं सकता है। कोरोना में 80 करोड़ लोगों के राशन की व्यवस्था सरकार की ओर से की गई है। जिन लोगों ने हम पर लंबे समय तक राज किया, जिनका सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। उनकी अर्थव्यवस्था से भारत ने छलांग लगाकर दुनिया की पांचवीं अर्थव्यवस्था बना। इसमें कोई संदेह नहीं कि हम जल्द ही एक दशक के अंदर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होंगे।

युवाओं को आज रुपयों की कतई कमी नहीं

उन्होंने मीडिया से आग्रह किया कि भारत के नवनिर्माण को सेलिब्रेट करें। जो हमने किया है, वह कोई नहीं कर सकता है। यह सोचकर हमें डर लगता है कि क्या इतना बड़ा काम हम कर पाएंगे। जबकि सरकार ने आज 40 लाख से ज्यादा लोगों का बैंक एकाउंट खुलवाया है। आज के नवयुवकों के मन में विचार और बदलाव की आवश्यकता है उसे धन की तो कतई कमी नहीं है। इतिहास का अध्ययन करेंगे तो पता चलेगा तो भारत के लोगों ने कभी गरीबी की बात नहीं की। उन्होंने दुनिया को मूल्यवान बनाने की बात की है।

राजयोग की बात अमिट है जो आज विश्व की आवश्यकता है...

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि यह दिन मुझे सदा याद रहेगा। जीवन की सच्चाई अंदर है। ब्रह्माकुमारीज में आकर भारतीय दर्शन की सोच के दर्शन होते हैं। दुनिया का कोई भी भू-भाग नहीं है जहां पर ब्रह्माकुमारीज़ की उपस्थिति न हो। यह उपस्थिति कोई भूगोल से जुड़ी नहीं बल्कि आध्यात्म की उपस्थिति है। यहां शब्दों में जो राजयोग की बात कही गई वह अमिट है और आज विश्व की आवश्यकता है। कम देखते हैं यहां जो बताया वह गीता का सार है। हमारी संस्कृति का आधार है। ऐसे में जब हम कि जहां मूल्यों का पतन हो रहा है वहां चिंतन की आवश्यकता है। ब्रह्माकुमारीज ने जो विजन बनाया है मैं उसे सैल्यूट करता हूं। सही शिक्षा, सही सोच और सही ज्ञान ही हमें ताकत दे सकता है। आध्यात्मिकता के अभाव में परिवार और समाज नष्ट हो जाते हैं लेकिन ब्रह्माकुमारीज समाज में आध्यात्मिक मूल्यों से सिंचित करने का कार्य कर रही है। यहां से जुड़ा हर एक सदस्य अपने आप में शांतिदूत है। आध्यात्मिक समावेश के बिना जीवन अधूरा है। सही और सच्चा विकास तभी संभव है जब विकास के साथ उसमें आध्यात्मिकता का समावेश हो।

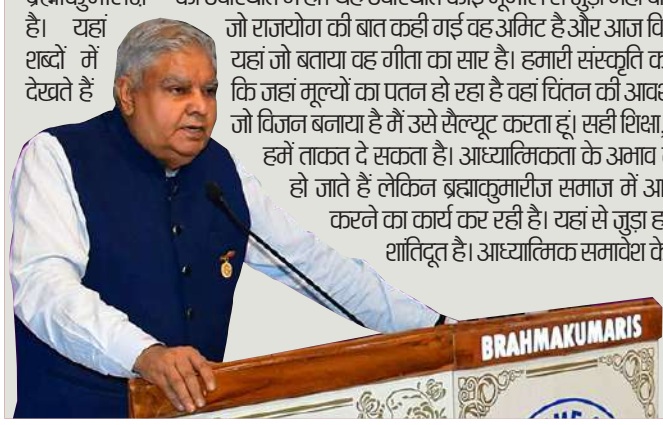

हमारी नई शिक्षा नीति संस्कृति पर आधारित

उन्होंने कहा कि मैंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का गहन अध्ययन किया है और मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इस नीति ने हमारी संस्कृति, विचारों और विरासत को पटल पर रखकर इसका निर्माण किया है। देश नई दिशा में जाएगा क्योंकि शिक्षा मूल है। धर्म हमारी धरोहर और पूंजी है। आध्यात्म, धर्म यूनिवर्सल है। जिसका प्रचार-प्रसार करने का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है।

उपराष्ट्रपति बोले- यहां आकर मुझे दो बातों का बोध हुआ

पहली» एक यहां मुझे बहुत कुछ छोड़कर जाना होगा। **दूसरी»** यहां मुझे होमवर्क दिया गया है- मेरे सम्मान में जो कविता पढ़ी गई है, उसमें जो लिखा गया है उसे सार्थक करने के लिए मुझे बहुत प्रयास करना होगा। यहां से मैं शक्ति लेकर जा रहा हूं कि राज्यसभा के प्रत्येक सदस्य को मैं प्रेरित करुंगा कि उनका सामूहिक आचरण भारतीयता के सिद्धांतों को दिखाए और अनुकरणीय हो।

श्रीलक्ष्मीजी के समान लक्षण भी धारण करना है

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका व लंदन के सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके जयंती दीदी ने कहा कि भारत की संस्कृति और त्योहार आज विश्वव्यापी हो गए हैं। राजयोग दुनिया के लिए भारत की सौगात है। योग अर्थात् खुद को जानकर परमात्मा के साथ संबंध जोड़ना ही योग है। दीपावली पर हम श्रीलक्ष्मी का न सिर्फ पूजन करते हैं बल्कि उनका आह्वान भी करते हैं। लक्ष्मी का अर्थ है उनके समान अपने जीवन में लक्षण धारण करना। उनके समान बनने का पुरुषार्थ करना। उन्होंने सभी को राजयोग का अभ्यास कराते हुए कहा कि इस शरीर के अंदर मैं चैतन्य दीपक आत्मा हूं... दीपराज परमात्मा द्वारा आत्मा की ज्योत फिर से प्रकट हो रही है...यह ज्योत विश्व में फैलती जा रही है। संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, मीडिया निदेशक बीके करुणा, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने भी समारोह में अपने उद्गार व्यक्त किए। संचालन शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका ने किया।

ये भी रहे मौजूद

विधायक जगसीराम कोली, जिला कलेक्टर डॉ. भंवरलाल, एसपी ममता गुप्ता, अधिकारी-कर्मचारी और पांच हजार से अधिक नागरिकगण मौजूद रहे।

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

बाबा कहते हैं हर एक बच्चे में विशेषता ही देखो

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। परमात्म कहते हैं मीठे बच्चे ऐसे नहीं करो, ऐसे चलो। तो ऐसा भगवान कोई और हो सकता है! वह तो दूर से ही कहेगा हाँ, ठीक है। बच्चे भी आजकल ऐसे ही हैं, दूर से ही गुडमार्निंग किया और चल पड़े लेकिन हम लोग ऐसे बच्चे भी नहीं हैं। बाबा अगर याद प्यार देता है तो हम रिटर्न में बाबा को भी रोज याद प्यार देते हैं ना, मुरली सुनते हैं तो बाबा जब याद प्यार देता है तो हम भी रिटर्न में देते हैं। इसलिए हमारा एक गीत है-इतना प्यार करेगा कौन...। लक्ष्मी-नारायण के बच्चे या बच्ची को भी इतना प्यार नहीं मिलेगा, जितना हमको अभी बाबा दे रहा है। बाबा की विशेषता देखो, हमारे अन्दर इतना प्यार क्यों आता है? हम लास्ट जन्म में किस अवस्था में आए। सब पुराना-संस्कार भी पुराना, स्वभाव भी पुराना, शरीर भी पुराना (चत्तियां लगा हुआ, ऑपरेशन किया हुआ)...तो ऐसे हम आए और बाबा ने हमारा कोई अवगुण नहीं देखा। बाबा भले कभी-कभी मुरली में मीठा-मीठा उल्हना भी देता है कि मैंने तुमको क्या दिया और तुमने मुझे सर्वव्यापी कहके गालियां ही दीं। वह भी कितने मीठे रूप में बोलता है, फिर भी बाबा ने यह देखा क्या? यह मेरी ग्लानि करने वाले हैं, गिराने वाले हैं और गिरे हुए हैं, पतित हैं, अवगुणी हैं। स्वभाव-संस्कार बहुत खराब हो गया है...यह सब बाबा ने नहीं देखा। तो बाबा ने अवगुण न देख करके, कोई की बुराई न देख करके यही कहा बच्चे, तुम मेरे और मैं तेरा। हमने कहा-बाबा और बाबा ने कहा-बच्चे। तो यह सेकेंड में सौदा हो गया ना! अगर कोई दिल से कहता है-बाबा मेरा। तो बाबा से जरूर रेसपान्ड मिलता है। बाबा भी कहते हैं-बच्चे तुम मेरे। और सेकेंड में अगर किससे पहचान हो जाती है और पहचान से हम कहते हैं -आप तो मेरे हो और वह भी कहें हां, आप मेरे हो। मेहनत क्या लगती है? सेकेंड की बात है। बाबा ने किसका भी कुछ अवगुण नहीं देखा, जो भी है बाबा हमेशा कहता है- जो हो, जैसे हो मेरे हो। हम भी कहते हैं - बाबा आप जो हो, निराकार हो, परमधाम निवासी हो हमारे हो। बाबा से कितना अच्छा सौदा हो गया। कोई मेहनत लगी क्या? ऐसे ही बाबा कहते हैं-आप भी ब्राह्मण परिवार के हो आप भी किसके अवगुणों को नहीं देखो। मानो किसी भी आत्मा में कोई बुराई है, 63 जन्म के संस्कार हैं तो कुछ ना कुछ बुराई है ही तब तो बाबा के बने। बाबा ने इस बारी हम सबको एक शिक्षा पावरफुल रूप से दी है कि किसका भी निगेटिव नहीं देखो। निगेटिव माना जो खराब चीज है, हरेक में कोई एक विशेषता वा गुण भी है और एक वह पास्ट का संस्कार भी पक्का है, जिसको हम कहते हैं यह मेरी नेचर है। कई भाई-बहन कहते हैं कि हमारे में और कुछ नहीं है लेकिन पता नहीं हमें क्रोध क्यों आ जाता है। मैं चाहता नहीं हूं, समझता भी हूं कि नहीं करना चाहिए लेकिन आ जाता है।

क्रमशः..

प्यारे बाबा से बिछुड़ कर हम पहली बार जा रहे थे

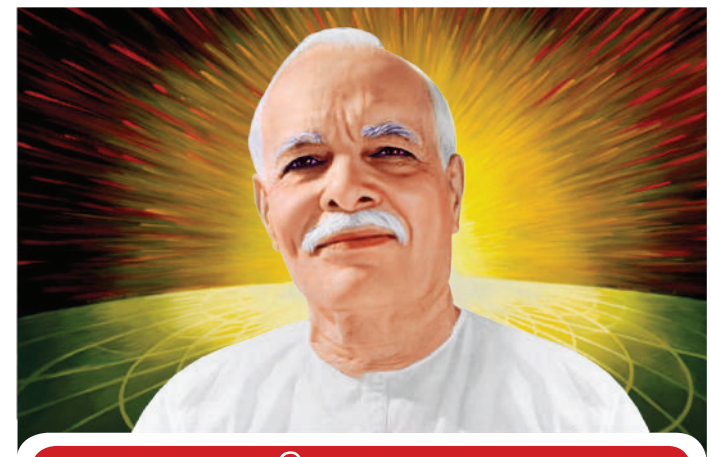

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

☑ स्थूल नेत्र वही थे परन्तु देखने वाला मन बदल चुका था।

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। उन दिनों मेरे लौकिक रिश्तेदार भी यज्ञ में मुझसे मिलने आए थे, परन्तु मैंने किसी को भी नहीं पहचाना था। जब मेरा यह पार्ट समाप्त हुआ तब भी बहुत दिनों तक मुझे अपने दैहिक नाम, देह के सम्बन्धियों का परिचय तथा यज्ञ-वत्सों के भी नाम आदि याद न थे। कई दिन तक जब मुझे यज्ञ-वत्सों का तथा मेरा परिचय याद दिलाया जाता रहा, तब मेरा पहले वाला अर्थात् यज्ञ का जीवन मुझे याद आया और दिव्य दृष्टि पर आधारित मेरा अब देवताई जीवन का पार्ट हल्का हुआ।

तब मुझे यज्ञ-वत्सों ने बताया कि डेढ़ मास मेरा जीवन बिल्कुल ही बदला हुआ था और एक दैवी शहजादी की तरह था। मुझे तो अब उस डेढ़ मास के जीवन का बिल्कुल पता तक नहीं था। बस, मैं यही जानती कि इस डेढ़ मास के समय में मैं कहीं गुम थी, पता नहीं कहां थी? इसे मैं अपना चौथा और विचित्र जीवन मानती हूँ जो कि स्वयं परमपिता परमात्मा की दिव्य शक्ति के प्रभाव से कुछ काल के लिए हुआ। इससे मेरे जीवन में एक और पलटा आया था।

यज्ञ-कुंड से बाहर निकलने के बाद संसार कैसा लगा?

इस प्रकार चार जन्म लेकर, अब काफी समय यज्ञ के दैवी वत्सों के साथ, ईश्वरीय गुरुकुल में, पवित्र वातावरण में ही हमारा जीवन बीता था। अब जब फिर अपने लौकिक परिवार की ज्ञान सेवार्थ यज्ञ-कुंड से बाहर जाने का ईश्वरीय आदेश मिला तो मुझे बड़ा अजीब सा लगा था। माउण्ट आबू में बस स्टैण्ड से बस में बैठकर जब हम आबू रोड पर पहुँचीं तो यह दुनिया ही अलग लगती थी! प्यारे बाबा से बिछुड़ कर हम पहली बार जा रहे थे, इसलिये मन में एक ओर तो यज्ञ की याद हमें खींच रही थी, दूसरी ओर इस संसार का वातावरण घोर नरक का जैसा लगता था।

देखने का मन बदल गया...

मेरे नेत्र वही थे परन्तु देखने वाला मन बदल गया हुआ था। मैं दिव्य दृष्टि से सभी को देखती थी। त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा ने अपनी शक्ति से मुझे कुछ समय के लिए ऐसा कर दिया था कि जो कोई भी यज्ञवत्स मेरे सामने आते, मेरे मन में उनकी वह सूरत-सीरत, उनका वह नामधाम, वह सम्बन्ध और कर्त्तव्य स्पष्ट रूप से अंकित हो जाता जोकि भविष्य में सतयुगी सृष्टि में उन्हें मिलना था। मुझसे यज्ञ-वत्स कई बातें पूछते कि आप कौन हो, तो मैं अपने आपको भविष्य की सतयुगी सृष्टि में की एक शहजादी (राजकुमारी) महसूस करने के कारण अपना वही देवताई नाम-धाम, आयु आदि बताती और जब वे पूछते कि फलां जो यज्ञ-वत्स है, यह कौन है ? तो उसे भी मैं सतयुगी राजकुमार या राजकुमारी या दास या दासी या सखी आदि जिस रूप में देखती, उसी का वर्णन करती। कौन से राजा का राज्य है, कौन मेरे माता-पिता हैं, उनका भी पता मैं देती थी। मेरा ऐसा पार्ट लगभग एक डेढ़ मास चला। मैं सतयुगी दैवी राजकुमारियों की तरह बहुत ही थोड़ा खाती थी।

दो-चार चम्मच दूध ही लेती थी...

दिन-भर में एक दो बार दूध के दो-चार चम्मच ही ले लेती थी। इतना बड़ा शरीर था, सभी सोचते कि यह इतने दिन तक इस प्रकार अल्प भोजन पर कैसे चलेगा? परन्तु मुझे कुछ भी कमजोरी अनुभव नहीं होती थी। एक छोटी-सी दैवी शहजादी की तरह ही मेरी चाल-ढाल, मेरा खान-पान और मेरा सारा व्यवहार था। सब देखकर वाह बाबा वाह के ही गीत गाते थे...**क्रमशः..**

दिमाग को ठंडा, दिल को खुश, स्वभाव को सरल रखो

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। दूसरों को देखने में अपने को भूल जाते हैं। तो एकाग्रचित्त हो करके एक सेकेंड में शान्त नहीं हो सकते हैं। उन्हें बाबा की मदद भी महसूस नहीं होगी। देही-अभिमानी बनने में बहुत मेहनत लगेगी। मेहनत थकाती है, मदद हल्का बना देती है। जब स्वयं के प्रति या सेवा में बाबा की मदद का अनुभव करते तो अन्दर से आवाज आता... बाबा, बाबा, बाबा...। श्वासों-श्वास मेरे को पढ़ाने वाला भी बाबा, चलाने वाला भी बाबा, सेवा में भी बाबा...। ऐसा लगेगा जैसे हमने कुछ किया ही नहीं। जो बाबा का बच्चा बनता है वह अनुभव करता है कि मुक्ति और जीवनमुक्ति हमारा बर्थराइट है।

बाबा के इन महावाक्यों ने भी कमाल किया है - जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा यह सारे दिन में कितनी बार याद आता है? इससे सब चिंतन से फ्री हो जाते। यह अच्छा नहीं हुआ, इसने यह अच्छा नहीं किया, यह ख्याल करना माना ड्रामा को भूल जाना। अच्छी बातें

हुई हैं, बहुत अच्छी हुई हैं, अगर कुछ नीचे ऊपर भी हुआ है तो उसमें भी सीखने की भावना है तो लगेगा जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा सो वह भी गारंटी से अच्छा ही होगा। अभी बाबा सामने है, वर्तमान समय की हमको बहुत कदर है, उसको हम एक सेकेंड एक श्वांस भी व्यर्थ नहीं करने वाले हैं, यह एक विधान बनाया है। मैं व्यर्थ नहीं करेंगी। बस, उसी अनुसार हमें चलना है। तो सेवा अर्थ चाहे स्व अर्थ गारंटी से आवाज निकलता है कि अच्छा ही होगा। भले बाहर से कुछ भी दिखाई पढ़े। जो बाबा की बातें हैं वह याद करने से, जो विघ्न भी आया है तो ऐसा लगेगा जैसे यह भी थोड़ा पर्दा है। अन्दर से भावना अच्छी रहेगी तो लगेगा यह पर्दा भी हट जाएगा। इसमें कल्याण समाया हुआ था। यह हमारे अंदर से निकले। घबराने की कोई बात नहीं है, इसमें भी कल्याण है। मेरापन से माया का जन्म होता है। अगर मेरापन ही समाप्त हो जाये तो माया आ ही नहीं सकती। बुद्धि की लाइन जितनी क्लीयर होगी तो पुरुषार्थ की स्पीड तीव्र हो जाएगी। बड़ा ठंडे दिमाग से सोचना, शान्त रहना यह भी एक विधान बनाना चाहिए। दिमाग को ठंडा रखो, दिल को खुश रखो, स्वभाव को सरल बनाओ - यह एक अच्छी विधि है। अटेन्शन वाली है दिल में बाबा को याद करके सदा खुश हो, अपने भाग्य को देखकर के सदा खुश हो और खुशी बाँटने से खुश हो। जिसमें सब खुश हैं उसमें हम भी खुश हों।

हर बात को लें पॉजिटिव

हर बात को पॉजिटिव ले करके हम खुश रहें तो हम कहेंगे हमारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं हैं। कईयों को कितनी भी खुशी दो, सदा ही ऐसे बैठे हुए होंगे। मजाल है जो प्यार से मुस्कुराते हुए, हर्षित हो करके मीठी निगाहों से किसी को ओम् शान्ति भी करें! अपने को जो खुश रखने वाला है वह सेकंड-सेकंड में खुश कर सकता है। चलते-चलते खुश कर सकता है। परन्तु अंदर ही अंदर कोई मुरझाया हुआ है तो वह खुशी कैसे बांट सकेगा? इसलिए पहले वह मूंझ निकले तब खुद भी खुश रहें और दूसरे को भी खुशी बांट सके। कोई कहते क्या करुं मुझे कुछ समझ में नहीं आता है, अरे बाबा ने इतनी समझ दी है फिर भी कहते हो कि मुझे समझ में नहीं आता है। जो अपने को खुश रखता है वह दूसरों की बात को सेकंड में समझ लेता है।

क्रमशः..

राजयोग मेडिटेशन से जीवन को मिली नई दिशा

विद्यार्थियों से लेकर आईएएस अधिकारियों ने जीवन में राजयोग को अपनाया, जीवन में आया बदलाव

ट्रेनिंग से हुआ आंतरिक विकास

यहां मैंने एक महीने में सीखा कि कैसे एक आदर्श ब्रह्माकुमारी बनें। एक-एक बात को गहराई और विस्तार से बताया गया। हमें जीवन में कैसे सशक्त बनना है और अपनी मर्यादाओं में रहकर अपने आपका और सर्व का कैसे कल्याण करना है यह भी सिखाया गया। यहां बताया गया कि हमें अंतर्मुखी होकर रहना है, जिससे हमारी आंतरिक शक्तियों का विकास होगा और गुणों का परिवर्तन होगा। यह हमारे हर सफलता की चाबी होगी। ब्रह्माकुमारी जीवन की मुख्य धारणाएं है जैसे- पवित्रता, योग की यथार्थ विधि, भोग लगाने की कला, सात दिवसीय कोर्स, संस्कार परिवर्तन एवं उनका मूल्य, संस्कार मिलन, भाषण कला इत्यादि विषयों का भी प्रशिक्षण दिया गया। ट्रेनिंग से जहां हमारा आंतरिक विकास हुआ, वहीं बड़ी दीदियों-दादियों का प्यार सम्मान मिला।

■ **बीके पूजा**
फाइनेंस में पीजी, पूर्व रिसर्च एनालिस्ट, बोरीवली, मुंबई

एक दिन जरूर बनेगी नई दुनिया

मुझे सन् 1991 में ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान के बारे में मालूम चला। मैं इस ज्ञान से पूरी तरह संतुष्ट हूं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का ज्ञान बिल्कुल नया और सैद्धांतिक है। इसमें भ्रम एवं संशय की कोई बात नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ जो नई दुनिया के निर्माण एवं स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का नारा लेकर चल रही हैं वह एक दिन अपने मकसद में जरूर सफल होगी। एक दिन जरूर इस धरती पर नई दुनिया बनेगी ऐसा मुझे विश्वास है। यहां का ज्ञान पूरी तरह से स्पष्ट एवं तार्किक है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है और वह नई दुनिया के निर्माण का कार्य कर रहे हैं। मेरे मन में जब कोई द्वंद या तनाव होता है तो मैं शिव बाबा को याद करके ईश्वरीय महावाक्य सुनती हूं तो मेरे सवालों का जवाब मुझे मिल जाता है और मेरा मन बिल्कुल शांत हो जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

■ **कु. शारदा राठौर,**
पूर्व मुख्य संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार

मनुष्य को स्वयं अर्थात् आत्मा का ज्ञान होना जरूरी

ब्रह्माकुमारीज़ की फिलासफी में मुझे पूरा विश्वास है। क्योंकि यहां ज्ञान देने का तरीका सरल एवं तार्किक है। प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वयं का ज्ञान अर्थात् आत्मा का ज्ञान होना जरूरी है। जब तक हम स्वयं को नहीं समझेंगे तब तक परमात्मा को नहीं समझ सकते है। इसी संस्था के द्वारा सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है क्योंकि इनके द्वारा जो मूल्यों की शिक्षा दी जाती है वह अन्य संस्थाओं में देखने को नहीं मिलती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा से व्यक्ति में मूल्यों का विकास एवं श्रेष्ठ कर्म की भावना जागृत होती है। यहां से सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है।

■ **डॉ. ज्योति शंकरसिंह,**
एसो. प्रोफेसर, गोविंद सिंह कॉलेज, पटना

मेडिटेशन के अभ्यास से इंटरव्यू में हो गया पास

मैं बचपन से ही सामाजिक कार्यों में रूचि रखता था। जब मैं 1979 में ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आया तब मुझे पता चला कि परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं और वे नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। यहां आने के बाद मुझे स्व का एवं परमात्मा का सत्य ज्ञान मिला। साथ ही हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? क्यों हम यहां आए हैं? हमें वापस कहां जाना है आदि प्रश्नों का समाधान हो गया। मुझे नौकरी मिलने में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान का बहुत बड़ा योगदान है। क्योंकि मुझसे इंटरव्यू में वही प्रश्न पूछे गए जो ज्ञान ब्रह्माकुमारीज़ में दिया जाता है। पहले मेरा जीवन स्वयं तक सीमित था, लेकिन अब ऐसा अनुभव होता है कि मुझे सारी दुनिया का कल्याण करना है। मैंने राजयोग की बहुत ही गहन साधना की। जिससे मुझे आभास हुआ कि शारीरिक व्यायाम की अपेक्षा राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करने से शरीर और मन को ज्यादा लाभ मिलता है। इससे हमारे विचार कम चलते हैं, जिससे हमारा मन शक्तिशाली बन जाता है। मेडिटेशन से मेरी इच्छाशक्ति बहुत बढ़ गई और हृदय रोग पर विजय प्राप्त भी की।

■ **नरेन्द्र वर्मा,** पूर्व राजस्व अधिकारी, मंडी, हिमाचल प्रदेश

राजयोग ध्यान से मैं डिप्रेशन से बाहर आया

मुझे 2009 में राष्ट्रपति से शौर्य चक्र प्राप्त हुआ। सफलता के नशे में मैं दूसरों से अच्छी तरह से व्यवहार नहीं करता था। सन् 2010 में मैंने स्वयं के ऊपर से पूरी तरह नियंत्रण खो दिया और हर बुराईयां हमारे अंदर आ गई। जहां पर मेरी नियुक्ति हुई थी वहां मैं स्वयं से खुश नहीं था और मैं हमेशा डिप्रेशन में रहने लगा। उसी समय मैं कुछ ब्रह्माकुमारी बहनों के सम्पर्क में आया। उन्होंने मुझे सफलता और जीवन का सही अर्थ समझाया। तब मैंने अनुभव किया कि भगवान सचमुच में इस धरती पर आए हुए है और नई दुनिया बना रहा है। तब मैंने 7 दिन तक राजयोग कोर्स किया। आज मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मैं भगवान का बच्चा हूँ। मेरी सभी परेशानियां खत्म हो गई। आज में पहले की अपेक्षा ज्यादा खुश और संतुष्ट रहता हूं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परमात्मा से मिलन मनाने का सौभाग्य मिला।

■ **कर्नल सुंदर विष्ट,**
राष्ट्रपति द्वारा शौर्य चक्र से सम्मानित

टीचर्स ट्रेनिंग से आध्यात्म को गहराई से जाना

मैं कुमारियों के लिए आयोजित टीचर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग ली थी। मुझे हमारी दीदीजी ने यहां इस 25 दिन चलने वाले प्रोग्राम में भेजा था। हम सारी कन्याओं का ट्रेनिंग शुरू हुआ जिसमें 600 कन्याएं विविध प्रांतों से आए हुए थे। यहां पर हमें हमारी दिनचर्या बताते थे जिसमे प्रातः अमृतवेला पश्चात मुरली क्लास और उसके बाद रेगुलर क्लासेस होती थी। ट्रेनिंग में हमे सेंटर पर आने वाले भाई-बहनों का मुरली रिविजन अलग-अलग प्रकार से केसे ले ये सिखाया जाता था। हमारी क्लासेस में मूल बातें यहीं सिखाई जाती थी कि अपने अंदर दिव्य गुणों की धारणा कैसे करें। हमें आने वाले जिज्ञासुओं को 7 दिवसीय कोर्स कैसे कराना है इसकी भी ट्रेनिंग दी थीं। मेरा अनुभव ये है कि यहां जब हमें दीदी फरिश्ते स्वरूप कि कमेंट्री करा रही थी तब मेरे साथ वाली बहन को मेरा फरिश्ता स्वरूप दिखाई दिया था। उन्होंने बताया कि उन्हें लाइट का हल्का फरिश्ता दिख रहा था। यहां कि दीदीयां बहुत मीठे स्वभाव की थी। उन्होंने हमें अत्यंत स्नेह और बहुत प्यार दिया। इन 25 दिनों में हमें आदर्श ब्रह्माकुमारी कैसे बनना है इसका प्रशिक्षण मिला इसलिए मैं उनका बहुत आभार व्यक्त करती हूं और अपने जीवन में इन सभी धारणाओं को हम सब धारण करेंगे।

■ **बीके सायली,** बीटेक, आईटी इंजीनियर, पुणे, महाराष्ट्र

यहां के ज्ञान पर मुझे पूर्ण विश्वास है

मैं ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान से 100 प्रतिशत संतुष्ट हूं। दस घंटे के सफर में हमें 18 घंटे समय लगा, लेकिन इस दौरान मैं तनावमुक्त रहा। मन की शांति की शुरुआत करने का मुझे यहां अवसर मिला। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना हो सकती है। मुझे शिवानी बहन के इंटरव्यू से प्रेरणा मिली। यहां के सिद्धांत और ज्ञान पर मुझे पूर्ण विश्वास है। नये समाज की स्थापना होनी ही चाहिए, क्योंकि वर्तमान समय कोई भी खुश नहीं है और अपना जीवन तनाव में व्यतीत कर रहे हैं। यह समाज बदलकर शांतिमय दुनिया जल्द ही आनी चाहिए। जिससे लोग खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकें। यदि तनाव की जिंदगी से बाहर आना है, मन की शांति चाहिए तो आप ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े और अपने परिवार को खुशहाल बनाएं।

■ **अरुण कुमार वर्णवाल,** पूर्व सहायक आयुक्त, वाणिज्य कर, नवादा, बिहार

ब्रह्माकुमारीज़ नैतिक मूल्यों का जो ज्ञान दे रही है वह समाज के लिए बहुत जरूरी है

आज समाज की जो स्थिति है वह अत्यंत चिंताजनक है और दिन-प्रतिदिन हालात बदतर होते जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण नैतिक मूल्यों का समाप्त होना है। ब्रह्माकुमारीज़ नैतिक मूल्यों का विस्तार से ज्ञान देती है। जिससे लोगों के जीवन में मूल्यों का समावेश होता है। सभ्य समाज मधुबन के मॉडल जैसा हो सकता है। जिसमें हर व्यक्ति सुखी, संपन्न तथा लोग शांति से जीवन व्यतीत करें। ये संस्था नैतिक मूल्यों का समाज में आदर्श प्रस्तुत कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा दिए जा रहे ज्ञान और सिद्धांत से निश्चित ही श्रेष्ठ समाज बन सकता है। इसका और कोई स्वरूप नहीं है। मुझे ब्रह्माकुमारीज़ की फिलॉसिफी में पूर्ण विश्वास है। यहां का ज्ञान सरल एवं स्पष्ट है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान को जीवन में धारण कर स्वस्थ समाज की स्थापना में मददगार बनें और सहयोग करें।

■ **शत्रुधनसिंह,**
पूर्व एडिशनल कमिश्नर, वाणिज्य कर, पटना, बिहार

संपादकीय

पुराने साल का भी जश्न मनाएं

[कड़वे अनुभवों को भूल उनसे सीख लें]

2022 का बीता हुआ साल कई मायनों में लोगों के लिए यादगार छोड़ गया। बीता हुआ साल कई खट्टी-मीठी यादों वाला रहा। जो अच्छी यादें हैं उसे याद रखें और जो मन को दुखी करने वाली घटनाएं हैं उससे सबक लेते हुए उन यादों को भूल जायें। उससे सीखें और जीवन में उससे शिक्षा लेते हुए जीवन में आगे बढ़ें। एक वर्ष बीत जाने पर भी जश्न और खुशी मनायें क्योंकि बीता हुआ साल अनुभव और तजुर्बा दे गया है। उससे सीखें और आगे बढ़ें। यदि किसी के लिए मन में नकारात्मक भाव हो तो उसे साल समाप्त होने के साथ ही छोड़ दें। 21वीं सदी में तेजी से लोगों के अन्दर निराशा और अवसाद ने बहुत परेशान कर रखा है। कई परिवारों ने सामूहिक आत्महत्यायें तक कर लीं है। इससे इन चीजों से निकलने के लिए बीते हुए साल को बिल्कुल याद ना करें। बीती को बिसार दें आगे की सुधि लें। उन लोगों का धन्यवाद करें जिन्होंने आपका साथ दिया। साथ ही उन लोगों का भी शुक्रिया अदा करें जिन्होंने आपको सीखने का अवसर दिया। चाहे वह शत्रु हो या मित्र हर किसी को धन्यवाद देते हुए अपने जीवन के नये पड़ाव की ओर बढ़ें। यही पुराने साल का संदेश है। जिन्दगी में प्रत्येक दिन ऐतिहासिक और सीखने वाला होता है। इसलिए हर पल को आनन्द के साथ जीयें और दूसरों को भी जीने का अवसर प्रदान करें।

बोध कथा/जीवन की सीख

बाज की सीख

एक बार एक शिकारी जंगल में शिकार करने के लिए गया। बहुत प्रयास करने के बाद उसने जाल में एक बाज पकड़ लिया। शिकारी जब बाज को लेकर जाने लगा तब रास्ते में बाज ने शिकारी से कहा, तुम मुझे लेकर क्यों जा रहे हो? शिकारी बोला, मैं तुम्हें मारकर खाने के लिए ले जा रहा हूँ। बाज ने सोचा कि अब तो मेरी मृत्यु निश्चित है। वह कुछ देर शांत रहा और कुछ सोचकर बोला, देखो, मुझे जितना जीना था मैंने जी लिया। अब मेरा मरना निश्चित है, लेकिन मरने से पहले मेरी एक आखिरी इच्छा है। बताओ अपनी इच्छा? बाज ने बताना शुरू किया-मरने से पहले मैं तुम्हें दो सीख देना चाहता हूँ, इसे तुम ध्यान से सुनना और सदा याद रखना।

पहली सीख तो यह कि किसी कि बातों का बिना प्रमाण, बिना सोचे-समझे विश्वास मत करना और दूसरी ये कि यदि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो या तुम्हारे हाथ से कुछ छूट जाए तो उसके लिए कभी दुःखी मत होना। शिकारी ने बाज की बात सुनी और अपने रास्ते आगे बढ़ने लगा। कुछ समय बाद बाज ने शिकारी से कहा-शिकारी एक बात बताओ अगर मैं तुम्हें कुछ ऐसा दे दूं जिससे तुम रातों-रात अमीर बन जाओ तो क्या तुम मुझे आज़ाद कर दोगे? शिकारी फ़ौरन रुका और बोला, क्या है वो चीज, जल्दी बताओ? बाज बोला, दरअसल, बहुत पहले मुझे राजमहल के करीब एक हीरा मिला था, जिसे उठाकर मैंने एक गुप्त स्थान पर रख दिया था।

अगर आज मैं मर जाऊँगा तो वो हीरा ऐसे ही बेकार चला जाएगा, इसलिए मैंने सोचा कि अगर तुम उसके बदले मुझे छोड़ दो तो मेरी जान भी बच जाएगी और तुम्हारी गरीबी भी हमेशा के लिए मिट जाएगी। यह सुनते ही शिकारी ने बिना कुछ सोचे-समझे बाज को आजाद कर दिया और वो हीरा लाने को कहा। बाज उड़ कर पेड़ की एक ऊंची शाखा पर जा बैठा और बोला, कुछ देर पहले ही मैंने तुम्हें सीख दी थी कि किसी के भी बातों का तुरंत विश्वास मत करना लेकिन तुमने उस सीख का पालन नहीं किया दरअसल, मेरे पास कोई हीरा नहीं है और अब मैं आज़ाद हूँ। यह सुनते ही शिकारी मायूस हो पछताने लगा, तभी बाज फिर बोला, तुम मेरी दूसरी सीख भूल गए कि अगर कुछ तुम्हारे साथ कुछ बुरा हो तो उसके लिए तुम कभी पछतावा मत करना।

संदेशः इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि हमें किसी अनजान व्यक्ति पर आसानी से विश्वास नहीं करना चाहिए और किसी प्रकार का नुकसान होने या असफलता मिलने पर दुखी नहीं होना चाहिए, बल्कि उस बात से सीख लेकर भविष्य में सतर्क रहना चाहिए।

मेरी कलम से...

डॉ. संदीप सिंह,
मेंबर ऑफ आईएए
बुक ऑफ वर्ल्ड
रिकॉर्ड, मुंबई

ब्रह्माकुमारीज़ अपने श्रेष्ठ कार्य के आधार पर किसी अवार्ड की मोहताज नहीं है

ब्रह्माकुमारीज संस्थान विश्व कल्याण के लिए तो अनेक कार्य कर रही है....

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कई ऐसे महान कार्य रोज करती है जिससे रोज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया जा सकता है। इतना बड़ा डायमंड हॉल जहां 25 हजार लोग बैठ सकते हैं यह एक रिकॉर्ड से कम नहीं है। जब पूरा देश अलग-अलग तरीके से आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा था। तब ब्रह्माकुमारीज़ की बहनों ने जेल के अंदर नक्की झील के अंदर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया। जहां पर 75 लोग 75 झंडा लेकर नाव के ऊपर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया, जो बहुत ही यूनिक था।

जिसके कारण इंटरनेशनल एक्सीलेंसी बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज हो गया। कुछ दिन पहले हुबली में दुनिया की सबसे बड़ी आर्ट गैलरी गीता श्लोक का उद्घाटन हुआ। वहां 114 पवेलियन भी आईएए बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज हुआ है। ऐसे तो यह इतनी बड़ी आध्यात्मिक संस्था किसी रिकॉर्ड की मोहताज नहीं है। लेकिन रिकॉर्ड और अवॉर्ड मिलने से और लोगों को इंप्रेशन मिलता है। कुछ अलग करने के लिए। मैं समझता हूं आप लोगों के अंदर एक अद्भुत प्रतिभा होगी। हर कोई कुछ ना कुछ अलग कर सकता है। जो लोग अलग करते हैं उन्हें अलग और खास तरीके से दुनिया देखती है।

हर कोई अपना जन्मदिन और एनिवर्सरी मनाते हुए रिकॉर्ड बना सकता है। बस उन्हें उस विशेष दिन पर एक पौधा अवश्य लगानी चाहिए। हम सब देख रहे हैं पूरी दुनिया में ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से सूखा-अकाल पड़ रहा है। लोग बहुत परेशान हैं तो आज हमारा कर्तव्य बनता है कि विश्व को बचाने के लिए ऐसे तो ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान विश्व कल्याण के लिए अनेक कार्य कर रही है। पौधा लगाने के साथ हम सब को उसकी पालना देख-भाल विशेष करनी है।

आध्यात्मिक जगत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का यथार्थ

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 53

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवॉर्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

महानता की गौरव गाथा से मानवीय मूल्यपरक सिद्धांत को जीवन में श्रेष्ठता की धारणा द्वारा महामानव की उच्चता तक पहुंचा जा सकता है। जहां से आत्म-दर्शन की दुर्लभ प्राप्ति व्यक्ति को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति प्रदान करती है जिसमें वह-'सर्वे भवंतु सुखिनः' की व्यापकता से संबद्ध होकर पूर्णतः कर्म संबंध से मुक्त अर्थात कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर लेता है। चेतना के निर्माण से चिंतनशील प्रवृत्ति का जन्म होता है जिससे व्यक्ति को 'मानव सेवा से माधव सेवा' की उपलब्धि प्राप्त होती है जो परमात्म-दर्शन का श्रेष्ठतम आधार बनकर व्यक्ति को राजयोग से मौन की ओर गतिशील करते हुए- 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धरोहर को अव्यक्त स्वरूप की आत्म उच्चता में परिवर्तित कर देती है।

दिव्य दृष्टि से समृद्धशाली सृष्टि...

आत्म जगत को सुख पहुंचाने का भावार्थ - 'सेवा अस्माकं धर्मः' के सिद्धांत एवं व्यवहार को प्रतिपादित करता है तथा व्यक्ति पारमार्थिक अहिंसा के प्रति संवेदनशील संचेतना से भर उठता है और वह -'अहिंसा परमो धर्म' की मूलभूत सृष्टि को अपने भीतर सदा के लिए सृजित करके आत्म उत्कर्ष की ओर बढ़ जाता है। दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलने का विचार जहां 'दिव्य दृष्टि से समृद्ध सृष्टि' की अनादि परंपरा सृजित करता है, वहीं मानव हृदय में भावनात्मक संतुष्टि को भी रेखांकित कर देता है जिससे आत्मिक

शक्ति की अनुभूति-मन, बुद्धि एवं संस्कार परिवर्तन से कर्म, पुरुषार्थ और भाग्य के परिष्कार को संभव बनाती है जो आत्मिक समृद्धि हेतु उच्चतम दृष्टिकोण अपनाने की निरंतर प्रेरणा प्रदान करता है।

मानवीय श्रेष्ठता के सामाजिक सरोकार

श्रेष्ठता के आगमन से जीवन में प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग सुनिश्चित होता है और व्यक्ति मानवीय सद्गुणों एवं शक्तियों से स्वयं को सुसज्जित अनुभव करते हुए आत्म सम्मान की गरिमापूर्ण स्थिति से मानवता को सुरक्षित करने में संलग्न हो जाता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा का आत्मबोध ज्ञान से सत्य दर्शन को व्यक्ति के समर्पण भाव तक स्वयं की संपूर्णता हेतु जागृत कर देता है जो उसे 'सर्व धर्म समभाव' के व्यवहार पक्ष पर लाकर खड़ा कर देता है और वह स्वयं की आत्मिक संपन्नता के मानवीय सरोकार से स्वतः ही जुड़ जाता है। संयमित जीवनशैली की विराट परंपरा, व्यक्ति को योग द्वारा कर्मों में कुशलता की अभिवृद्धि के लिए अनुप्राणित करती है जो जीवन दर्शन से धर्म-कर्म के सामंजस्य को 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संबंध बनाकर जीवन को उपराम स्थिति अर्थात् साक्षी दृष्टा की उच्चता पर स्थापित कर देती है।

आध्यात्म द्वारा मानवता का मंगल...

महानता की गौरव गाथा से मानवीय मूल्यपरक सिद्धांत को जीवन में श्रेष्ठता की धारणा द्वारा महामानव की उच्चता तक पहुंचा जा सकता है। जहां से आत्मदर्शन की दुर्लभ प्राप्ति व्यक्ति को आध्यात्मिक पुरुषार्थ की शक्ति प्रदान करती है जिसमें वह 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की व्यापकता से संबद्ध होकर पूर्णतः कर्म संबंध से मुक्त अर्थात कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर लेता है। चेतना के निर्माण से चिंतनशील प्रवृत्ति का जन्म होता है जिससे व्यक्ति को 'मानव सेवा से माधव सेवा' की उपलब्धि प्राप्त होती है जो परमात्म दर्शन का श्रेष्ठतम आधार बनकर व्यक्ति को राजयोग से मौन की ओर गतिशील करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धरोहर को अव्यक्त स्वरूप की आत्म उच्चता में परिवर्तित कर देती है। जीवन में श्रेष्ठता की स्थिति का प्रमाण अतीत, आगत एवं अनंत के प्रसंग में मानवता की मंगलकारी पवित्र अवस्था को अभिव्यक्त करता है। जिसमें 'आत्म उत्थान से लोककल्याण की यात्रा' जन्म-जन्मांतर के संदर्भ एवं प्रसंग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिप्रेरणा प्रदान कर सतत् रूप से मानवता को आधारमूर्त, उद्धारमूर्त, अनुभवीमूर्त, उदाहरणमूर्त एवं साक्षात्कारमूर्त स्वरूप में सदा गतिमान बनाए रखता है।

"प्यार की भूख को दूर करना रोटी की भूख से कही अधिक कठिन है"

-मदर टेरेसा, समाजसेवी

"आप अपने दोस्तों को बदल सकते हैं लेकिन पड़ोसी को नहीं"

-अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह से की मुलाकात

शिव आमंत्रण, उज्जैन/मप्र। श्री महाकाल लोक का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। इसमें देशभर से 200 से अधिक संतों के साथ ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से इंदौर की प्रशासनिक निदेशिका बीके हेमलता दीदी एवं उज्जैन की निदेशिका बीके उषा दीदी को विशेष अतिथि के तौर पर पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री उषा ठाकुर ने सम्मानित किया। साथ में बीके अनीता (इंदौर), बीके उषा (इंदौर), बीके मंजू (उज्जैन) का भी सम्मान किया गया। इस दौरान ब्रम्हाकुमारी बहनों ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मिलकर परमात्म संदेश दिया।

राष्ट्रपति के गांधी नगर पहुंचने पर किया स्वागत

शिव आमंत्रण, गांधीनगर/गुजरात। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु गांधी जयंती पर गुजरात की राजधानी गांधीनगर पहुंचीं। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कैलाश दीदी, मणिनगर सब जोन प्रभारी बीके नेहाबेन, चिलोडा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके ताराबेन, ऊर्जानगर सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके रंजनबेन एवं केपिटल ऑफसेट्स तथा केपिटल वर्तमान अखबार के मालिक भ्राता रमेशभाई पटेल भी मौजूद रहे। इस दौरान राष्ट्रपति ने करीब आधा घंटे तक बीके बहनों के साथ ज्ञान चर्चा की।

दिल्ली और पंजाब के मुख्यमंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट की

शिव आमंत्रण, गारियाधार/गुजरात। चुनाव-प्रचार के लिए गुजरात आए आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल एवं पंजाब के सीएम भगवंत मान का बीके दीपा ने गुलदस्ते और शाल से स्वागत-सम्मान किया। साथ ही ईश्वरीय सौगात भेंट की। इस दौरान उन्होंने संस्था के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए इन्हें समाज के लिए बहुत उपयोगी बताया।

सेव वाटर मिशन अभियान का राज्यपाल अनुसुइया उईके ने किया शुभारंभ

शिव आमंत्रण, बिलासपुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के टेलीफोन एक्सचेंज रोड स्थित राजयोग जीवन की निदेशिका बीके स्वाति दीदी ने राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके से साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एस.ई.सी.एल.) गेस्ट हाउस में सौजन्य भेंट की। इस दौरान बीके स्वाति दीदी ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक एवं नैतिक उत्थान के कार्यक्रमों की जानकारी दी। साथ ही लायंस क्लब एवं सहयोग फाउंडेशन के साथ मिलकर ब्रह्माकुमारीज़ सेव वाटर मिशन बिलासपुर में चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत वॉटर ओवरफ्लो डिवाइस का वितरण एवं जागरूकता कार्यक्रम शुरू होने जा रहा है। इसी तारतम्य में स्वाति दीदी ने इस डिवाइस का उद्घाटन राज्यपाल द्वारा करवाया एवं उन्हें डिवाइस भेंट की। राज्यपाल ने विस्तार से जाना समझा एवं यह डिवाइस कैसे काम करता है इसकी पूरी जानकारी ली।

राज्यपाल ने संस्था के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि मातृशक्ति ही दुनिया को एक सही दिशा दिखा सकती है। आप लोगों के द्वारा किए जा रहे कार्य बेहद ही सराहनीय एवं जन उपयोगी हैं। आज मानव मात्र को आंतरिक सुख शांति की बेहद आवश्यकता है। प्रकृति के संरक्षण के लिए भी आप लोगों के द्वारा किया जा रहा कार्य बेहद ही सराहनीय है। कार्यक्रम में बीके संतो दीदी, कमल छाबड़ा, हेमन्त अग्रवाल, विनोद सिंह

ब्रह्माकुमारीज़ सर्कल बनेगा अनेक आत्माओं को जगाने का स्तंभ

शिव आमंत्रण, सूरत/गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ सर्कल का उद्घाटन बिजनेस हब के सामने, कतारगाम, सूरत में दिल्ली ओआरसी के डायरेक्टर बीके आशा द्वारा किया गया। जहां नरेंद्र पांडव (कॉरपोरेटर) भी शामिल हुए एवं अन्य आमंत्रित मेहमानों के हाथों से दीप प्रज्वलन की विधि संपन्न की गई। बीके आशा दीदी ने स्तंभ का महत्व बताते हुए कहा कि यह स्तंभ अनेक आत्माओं की ज्ञान की ज्योति जगाने एवं अनेक आत्माओं को अपने परमपिता परमात्मा शिव का परिचय दिलाने के लिए निमित्त बनेगा। सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके शारदा ने खुले दिल से सबका स्वागत करते हुए अभिवादन किया। बीके रंजन (सबजोन इंचार्ज) भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं।

आत्मदीप जगाना ही सच्ची दीवाली मनाना है: बीके बृजमोहन

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के भोराकलां स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में दीपावली बड़ी धूमधाम से मनाई। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एनसीआर के तीन हजार से अधिक लोगों ने शिरकत की। दीप प्रज्वलित कर सभी ने स्वयं को ज्ञान की रोशनी से रोशन कर बुराइयों से मुक्ति का संकल्प लिया। संस्था के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि दीवाली सतयुगी स्वर्णिम दुनिया का यादगार है। बाहर के दीपक जगाना तो आसान है। लेकिन सच्ची दीवाली तो आत्मदीप जगाने से होगी। दशहरा के बाद दीवाली का त्योहार मनाया जाता है। जो कि अज्ञान अंधकार खत्म हो ज्ञान दीप जगाने का प्रतीक है। दीपावली पर एक दो को मिठाई बांटने का अर्थ ही है कि अंदर की

कड़वाहट समाप्त कर जीवन में मिठास भरें। ओआरसी की निदेशिका आशा दीदी ने सभी का स्वागत किया। दीपराज परमात्मा के साथ आत्मा रूपी दीप रानियों का मिलन ही दीवाली के आध्यात्मिक रहस्य को दर्शाता है। दीवाली पर स्वच्छता वास्तव में आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है। पटाखे चलाना खुशी से सम्पन्न स्थिति का सूचक है। हम आध्यात्मिक शक्ति से जितना भरपूर होंगे। उतना ही आत्मिक ज्योति जगमगाएगी। बीके शुक्ला दीदी ने कहा कि राजयोग से ही आत्मिक ज्योति प्रज्वलित होती है। चक्रधारी दीदी ने ईश्वरीय विश्व विद्यालय में दीवाली के महत्व के बारे में बताया। संस्था के दिल्ली, करोल बाग स्थित सेवाकेंद्र प्रभारी पुष्पा दीदी एवं विजय दीदी ने भी सबको शुभ कामनाएं दी। दीवाली के नए गीत की भी लॉन्चिंग हुई। गायक बृजेश मिश्रा ने ईश्वरीय स्मृति के गीतों से सबको भाव विभोर किया। बीके रीना ने भी गीतों की प्रस्तुति दी। बीके आद्या ने नृत्य के माध्यम से दीपावली की शुभ कामनाएं दी। दीपावली के गीत पर नृत्य द्वारा भी संचालन बीके ख्याति एवं बीके ईशु ने किया।

परमात्मा की याद में रहो तो सारे दुःखों से छुट जायेगें और ही सुख में रहेगें।

खुशी और शांति जो हम बाहर ढूढ़ रहे हैं वो हमारे अंदर है।

हमारी सोच के अनुसार ही दुनिया में हमें हर चीज नजर आती है

अपने मन मंदिर को संवारें, जीवन अपने आप संवर जाएगा

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आत्मा अपने निज स्वरूप में सात गुणों से बनी हुई है, लेकिन आज हम क्या कहते हैं मुझे शांति चाहिए, प्यार चाहिए, सुख चाहिए, खुशी चाहिए, शक्ति चाहिए। सबसे इम्पोर्टेन्ट चीज तो यह हो जाती है जब हमें याद हो जाता है कि मैं आत्मा हूं तो यह बहुत बड़ी शक्ति है क्यों? क्योंकि मुझे याद आ जाता है मुझे शांति चाहिए नहीं, मुझे प्यार चाहिए नहीं, खुशी चाहिए नहीं, मैं आत्मा शांत स्वरूप हूं। जैसे कोई अपनी चीज हो मिल ही नहीं रही हो उधर ढूंढ़ा पड़ोसियों के घर भी ढूंढ़ लिया लेकिन बाद में पता चलता है मेरे पॉकेट में पड़ी है तो यह सात गुण हमारे ही पॉकेट में पड़े हुए हैं। क्योंकि ये हमारे संस्कार हैं लेकिन हम भूल गए तो चीजों में ढूंढने लग गए। लोगों से मांगने लग गए। मुझे सम्मान चाहिए, मुझे समझो, मुझ पर विश्वास करो, जैसे ही याद आता है कि मैं आत्मा हूं, शांत स्वरूप, शक्ति स्वरूप आत्मा हूं, ये सबसे महत्वपूर्ण और आखिरी होमवर्क है।

मैं शक्तिशाली आत्मा हूं,

सारा दिन में केवल बार-बार अपने को ये नहीं याद दिलाना कि मैं आत्मा हूं ये तो आधी बात हुई। संपूर्ण सत्य तो ये है कि मैं शक्तिशाली आत्मा हूं, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा, मैं शांति स्वरूप आत्मा हूं। अब जब ये याद हो गया कि मैं ये आत्मा हूं तो फिर मांगना खत्म, चाहना खत्म, ढूंढ़ना खत्म। इन संस्कारों को अपनी हर सोच, हर कर्म में, हर व्यवहार में लाएंगे तो मांगने के बजाय देने वाले बन जाएंगे। देने वाला ही दिव्य आत्मा होता है। आज से एक चीज पक्की करें कि मुझे इनमें से कुछ चाहिए नहीं, ये सारे संस्कार मेरे हैं। यही है वो सफेद रंग जो छिप गया था। सफेद वस्त्र पर दाग लग गए न तो अनेक जन्म लेते-लेते, अनेक परिस्थितियां, अनेक परिवार, अनेक बातें होती हैं मुझ आत्मा के ऊपर अहंकार का संस्कार, काम विकार का संस्कार अशांति, परेशानी, दुःख, नफ़रत गुस्सा ये सारे जो हैं यह मैं नहीं हूं। ये ऊपर से लगे हुए दाग हैं अर्थात् ये मुझ आत्मा का संस्कार नहीं है। जो ओरिजिनल संस्कार हैं, आत्मा का उसको पुनः जागृत कर स्मृति में रख उस आधार से व्यवहार करना। बस थोड़ा समय अभ्यास करना है और उसके लिए कुछ छोड़ना नहीं है। घर-गृहस्थी में रहना है। परिवार संभालना है। बस हर रोज इन बातों को अपनी बुद्धि में याद रखना है। उसके लिए सत्संग जरूरी है और निराकार परमात्मा। जैसे मैं आत्मा ज्योति स्वरूप, परमात्मा एक हैं।

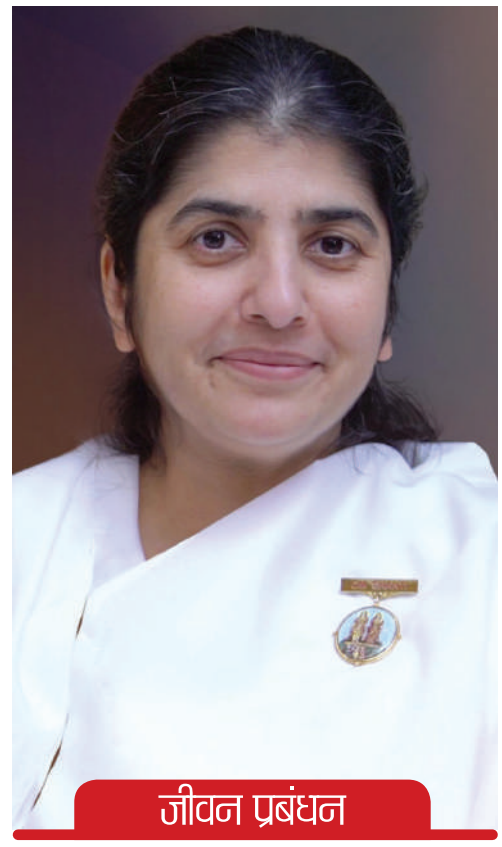

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

परमात्मा को प्यार से याद करें...

परमात्मा को देखें कि वह भी निराकार ज्योति और उसकी सारी शक्तियां मुझ आत्मा में भर रही हैं। वो शांति के सागर, प्यार के सागर मेरे परमपिता हैं। जिसके माता-पिता सर्वशक्तिमान, क्या वो बच्चा मांग करने वाला होगा कि मुझे शक्ति दो, प्यार दो, सम्मान दो। बच्चे तो अपने माता-पिता के वर्षा का अधिकारी होता है। हम बच्चे परमात्मा के बच्चे हैं, जैसा वो, वैसे हमारे संस्कार। परमात्मा को याद करते हुए, उनसे कनेक्शन जोड़ते हुए रोज इसको देखें कि सर्वशक्तिमान की सारी शक्तियां मुझ आत्मा में भर्ती जा रही हैं। कभी नहीं कहना, आज से मुझे प्यार चाहिए, सम्मान चाहिए, मुझसे प्यार से बात करो। नहीं, प्यार का सागर मेरा पिता है। मैं प्रेम स्वरूप हूं, मैं हरेक को प्यार करुं, हर एक से प्यार से बात करुं।

ध्यान रखें कि हमारा सर्कल हमेशा व्हाइट रहे...

जब हम छोटे थे और एक दिन अपने मम्मी-पापा के साथ कहीं बाहर घूमने गए थे मार्केट। मैंने कहा मुझे खिलौना चाहिए, तो उन्होंने कहा नहीं घर में बहुत सारे पड़े हैं। मुझे ये चाहिए, नहीं ज़रूरत है तुमको। हमने मार्केट में खड़े होकर क्या किया, हमने मार्केट में खड़े होकर थोड़ा जोर से रो दिया और मम्मी-पापा ने उसी समय वो चीजें लाकर दे दी। प्यार से बोला नहीं दिया, दूसरी बार भी आराम से बोला नहीं दिया, जोर से बोला तो एक ही बार में देंगे दिया, अगली बार तो पहले ही जोर से बोल देना है एक ही बार में काम हो जाएगा। काम तो हो जाते हैं, लेकिन कुछ और भी हो जाता है, साथ-साथ मेरी बैटरी डाउन हो जाती है। जब मेरी बैटरी डाउन हो जाती हैं तो मेरी दुनिया पर असर पड़ जाता है उसका। जब हम देवी-देवताओं के मंदिर में जाते हैं यह उनके चित्र देखते हैं उनके पीछे एक व्हाइट कलर का सर्कल है। क्या सफ़ेद कलर का सर्कल केवल देवी-देवताओं के पीछे होता है या सबके पीछे होता। अपने पीछे भी चेक करो कि मेरे पीछे जो सर्कल हैं वो किस कलर का हैं, क्योंकि हर एक के पीछे एक सर्कल हैं। जिसका सर्कल डार्क होगा वो दूसरों को भी क्या रेडिएट करेगा-डार्क। इसलिए कई बार आप देखना कि लोगों से मिलेंगे लेकिन आप कहेंगे इनसे मिलकर ना मुझे कंफर्ट लग रहा। ये वो सर्कल है जो आपको परेशान कर रहा। कुछ लोगों को हम मिलेंगे कहेंगे इनसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। ये वो सर्कल है जो आपको प्रभावित कर रहा। हीलर का सर्कल कौन सा होना चाहिए? व्हाइट होना चाहिए क्योंकि हमारे पास हर दस मिनट बाद जो बैठने वाला है उसका सर्कल व्हाइट से थोड़ा दूर है तो सामने वाले की एनर्जी का असर हमारे ऊपर भी होना शुरू हो जाएगा।

स्वयं को स्थिरचित्त, निर्भय, निश्चिंत रखते हुए बीमारी में मिली सफलता

कोरोना लॉकडाउन के समय की बात है। मुझे 104 डिग्री बुखार होते हुए भी ईश्वरीय सेवा में लगी रही। तब रात में मैं मेडिटेशन रूम के पास लेट गई। मन ही मन योग में दृष्टि, योग द्वारा बाबा से दृष्टि लेने का संकल्प प्रयोग करते हुए अपने फेफड़ों को शक्तिशाली दृष्टि योग द्वारा बल देने का विजन बनाया। इसका परिणाम उस परिस्थिति के अनुरूप सकारात्मक रहा, क्योंकि शरीर में तो तफलीफ थी। परन्तु मन में किसी प्रकार का भय, चिंता न होकर निश्चिंतता, निर्भयता का अनुभव हो रहा था। साक्षी भाव अर्थात् दर्द तो था लेकिन उस का दुःख न था। लोगों को यकीन नहीं हो रहा था कि मुझे कोरोना हो गया है। तीसरे दिन श्वास लेने की समस्या महसूस हुई। मुख से श्वांस खींचकर लेना पड़ता था। अचानक ही मेरा ध्यान इस बात पर गया कि मैं आत्मा बार-बार थर्मामीटर से बुखार चेक करती हूं लेकिन बुखार दिखाता है। क्यों न मैं थर्मामीटर को 97 डिग्री इमर्ज कर विजन द्वारा योग का प्रयोग करूं। इस प्रयोग से एक घण्टे के अंदर ही शरीर में हल्का अनुभव हुआ और तब थर्मामीटर से चेक करने पर 97-98 डिग्री दिखाने लगा। चौथे दिन बलगम की समस्या उत्पन्न हुई। श्वास की समस्या नार्मल हो गई थी, लेकिन बलगम चार दिन अधिक मात्रा में आता रहा। पांचवें दिन से मात्रा कम हुई। सातवें दिन नार्मल लगने लगा। लेकिन जब एक के द्वारा स्थिति पूछने पर की कैसे हो? तो मैंने कहा कि जब स्थूल कार्य करूंगी तब पता चलेगा। उन्होंने कहा कि 15 दिन तक बेड रेस्ट पर रहना है। स्थूल कार्य नहीं करने हैं। उनकी बात मानकर सात दिन मैंने स्थूल सेवा नहीं की लेकिन उसके बाद मैंने धीरे-धीरे सफाई की सेवा शुरू कर ठीक हो गई। तो मैंने अनुभव किया कि हमारे जीवन में सकारात्मक संकल्प के साथ-साथ हिम्मत और धैर्य बहुत जरूरी है क्योंकि परमात्मा हमारे साथ हैं।

● बीके सरस्वती, बेलगहना, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

योगाभ्यास से आश्चर्यजनक बदलाव हुए

मेरे पिता का नाम श्री सीताराम है। वह पुलिस में हैं। उनका अक्सर तबादला होने के कारण अलग-अलग राज्य में जाते रहते थे। 9 अक्टूबर 2016 को टीवी में बीके शिवानी दीदी को सुनकर मुझे उत्सुकता हुई और मैं नियमित उनका कार्यक्रम देखने लगा। 'लाल प्रकाश' में भाई-बहनों को योग करते देख, मुझे एक अलग ही तरह का अनुभव हुआ। कालांतर में जब पिता का तबादला आसाम में हुआ तो हम सपरिवार आसाम आ गए, यहां आईटीआई, एमटीआई, एमबीआई, बीबीएम की पढ़ाई करते हुए नजदीकी सेवाकेंद्र पर बीके दीपू दीदी और बीके शीला दीदी से साप्ताहिक कोर्स किया। इसके बाद नियमित अमृतबेला योग करने लगा, परिणाम स्वरूप मुझमें आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगे। पहले मैं छोटी-छोटी बातों में क्रोध करना, चिड़चिड़ापन और जो अवगुण थे वह योग से समाप्त हो गए। मुझमें परिवर्तन देख मेरे मित्र भी सेवाकेंद्र जाने लगे। दक्षिण भारतीय होने के कारण मुझे तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम, भाषा में अच्छी पकड़ थी। मैं जब आसाम आया तो मुझे हिंदी, बांग्ला, असमिया, नागामिस भाषा का भी ज्ञान हो गया। आसाम में कई जगहों पर दक्षिण भारतीय लोग आकर नौकरी कर रहे हैं, इसलिए हमारी सेवाकेंद्र की शीला दीदी ने कहा कि आपको दक्षिण भारतीय भाषा के साथ-साथ हिंदी, बांग्ला आदि भाषा भी अच्छी आती है तो आप जाकर उनको बाबा को ज्ञान दो। चूंकि भाषा के वजह से बाबा ने मुझे निमित्त बनाया तो मैं सेवा करने लगा और अब मैं वर्तमान समय में नियमित रूप से आसाम के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा दे रहा हूं।

● बीके राज, नेल्लोरु, आंध्रप्रदेश

राजयोग ध्यान से बढ़ी एकाग्रता

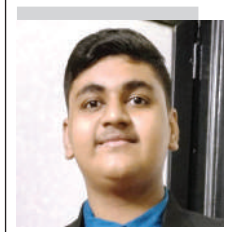

मैं 11वीं कक्षा का छात्र हूं। पिछले 2 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कर रहा हूं। इससे हमारे जीवन में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इससे मेरे अंदर झूठ बोलने की आदत, गुस्सा करने की आदत से छुटकारा मिलता जा रहा है। 2 साल पहले तक मुझे बाजार का भोजन के साथ-साथ जंक फूड खाने की आदत थी, जो मेरे स्वास्थ्य के लिए बिल्कुल हानिकारक था। मैंने घर का सात्विक भोजन अपनाकर जंक फूड को अलविदा कह दिया। पढ़ाई में मन लगने लगा है। मेरी एकाग्रता बहुत बढ़ गई है। मैं आज के बच्चों और युवाओं से अपील करूंगा की वह भी जीवन में अध्यात्मिकता के साथ मेडिटेशन को सीखें। घर का भोजन सात्विक आहार लें जीवन बिल्कुल सुखी हो जाएगा। क्योंकि हमारे विचारों और मन पर भोजन का बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ता है। हमारा भोजन जितना शुद्ध सात्विक और परमात्मा की याद में बनाया गया होगा तो उसे करने वाले के मन और तन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अब मैं बहु खुश रहता हूं। साथ ही कभी पढ़ाई की भी चिंता नहीं होती है। पढ़ने बैठने के पहले प्यारे शिव बाबा का आह्वान करता हूं कि आओ मेरे बाबा आप मुझे बैठकर पढ़ाओ। राजयोग ध्यान से मेरा पूरा जीवन ही बदल गया है।

● बीके जैनम शाह, महाराष्ट्र

'आनंद सरोवर' समाज के लिए समर्पित

शिव आमंत्रण, सिरसा/हरियाणा । ब्रह्माकुमारीज़ के निवनिर्मित भजीवन आनन्द सरोवर का भव्य उदघाटन संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका एवं यूरोपियन डायरेक्टर राजयोगिनी जयन्ती दीदी, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय द्वारा किया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से नोर्थ जोन इन्चार्ज बीके प्रेम दीदी, बीके उत्तरा दीदी, बठिण्डा सबजोन इन्चार्ज बीके कैलाश दीदी, शांतिजीवन की बीके हंसा दीदी, हांसी से बीके लक्ष्मी दीदी भी मौजूद रहीं।

शिवध्वज फहराकर नए भजीवन का उद्घाटन किया गया। तत्पश्चात परिसर में बने पिरामिड, बाबा की झोपड़ी, विशाल किचन, विशेष ध्यान कक्ष (बाबा रुम) का भी राजयोगिनी जयन्ती दीदी सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने शुभारम्भ किया। आनन्द सरोवर के विशाल हॉल में आयोजित उद्घाटन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ केक काटकर खुशियां मनाईं।

कार्यक्रम में हरियाणा सहित मन के उदगार एवं आशीर्वचन प्रस्तुत कर विशाल सभा को सम्बोधित किया। कार्यक्रम में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, यू.पी., दिल्ली एवं अन्य कई स्थानों के वरिष्ठ बी के भाई बहनों ने शिरकत की।

बता दें कि सिरसा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की आध्यात्मिक सेवाओं का आगाज सन 1969 में शहर के एक छोटे से स्थान से हुआ। संस्था की निःस्वार्थ सेवाओं ने अनेकों आत्माओं के जीवन को नई दिशा देकर आन्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त किया जिसके परिणामस्वरुप अब विशाल भजीवन का निर्माण हुआ। इन ईश्वरीय सेवाओं के 53 वर्ष पूरे होने पर भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह का अयोजन किया गया। समारोह में शहर के विशिष्ट पत्रकार, राजनीतिक नेता, डॉक्टर्स, एडवोकेट, शिक्षाविदों सहित अनेकों गणमान्य हस्तियां शामिल हुई।

दूज पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री का सम्मान कर तिलक लगाया

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग । मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और झारखण्ड के राज्यपाल रमेश बैस दीपावली मनाने के लिए अपने घर रायपुर आए थे। इस पर उन्हें क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी बीके कमला एवं सविता द्वारा तिलक लगाकर मुंह मीठा कराया गया। गोवर्धन त्यौहार पर मुख्यमंत्री निवास पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें इन्दौर जोन की निदेशिका बीके कमला ने भी शिरकत की। साथ ही मुख्यमंत्री को दूज का तिलक लगाकर ईश्वरीय प्रसाद दिया। इस अवसर पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सविता दीदी ने छ.ग. उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एवं वर्तमान में छ.ग. राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण न्यायमूर्ति गौतम चौरड़िया, लोकसभा सांसद सुनील सोनी, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल आदि को भी दूज को तिलक लगाकर दीपावली का ईश्वरीय प्रसाद प्रदान किया।

कलाकारों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, रीवा/मप्र। आठ अरब दुआओं की परियोजना दीपावली पर दीया-दुआ दीपोत्सव के रूप में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर मनाई गई। इसमें शहर के कला के क्षेत्र में जुटे वरिष्ठ कलाकारों को सम्मानित किया गया। इस दौरान रीवा के कलाकार समूह द्वारा दुआ परियोजना शुभारंभ करने पर संयोजक बीके प्रकाश को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. आईबीबी पटेल, प्रो. उषा किरण भटनागर, शायर जावेद सौदागर, गीतकार नीलेश श्रीवास्तव, डॉ बिमल दुबे, नारायण डिगवानी, कवि उमेश मिश्रा बिहान, शिव कुशवाहा, राजलाखन पटेल, अंश मिश्रा, अविराज चौथवानी, सिद्धार्थ श्रीवास्तव, गायक साकेत श्रीवास्तव, गीतकार सुनील भारती, शाहिद परवेज, मीरा क्षात्रा, बीके बिंदु, कैलाश तिवारी, सूर्यवती, इंजीनियर बीके दीपक, कृतिका, गीतिका, सहित दिव्य नगरी के कई बच्चे उपस्थित रहे। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके निर्मला ने सभी कलाकारों को सम्मानित किया।

एक-दूसरे के विचारों, बातों का करें सम्मान

शिव आमंत्रण, ग्वालियर/मप्र । आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के अंतर्गत प्रभु उपहार भजीवन माधौगंज स्थित सेवाकेंद्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सेवाकेंद्र इंचार्ज बीके आदर्श दीदी ने कहा कि आज हमारी संस्कृति धीरे-धीरे खोती जा रही है इसका प्रमुख कारण है की इस संसार में बहुत सारे मनुष्य दूसरी संस्कृति को अपना रहे हैं। अब हम सभी मिलकर अपनी भारतीय संस्कृति का विस्तार करेंगे और उसे विश्व भर में प्रसिद्ध करेंगे। घर में रहते एक दूसरे के विचारों का, एक दूसरे की बातों का सम्मान करना, सबके प्रति एक समान भाव रखना, एक दूसरे का आदर करना, एक दूसरे के प्रति दया भाव रखना बहुत ज़रूरी है। बीके प्रहलाद ने भी अपने विचार रखे। बीके जीवन, विजेंद्र, सुरभि, रोशनी, खुशबू, आरती, प्रिया, संजय, संतोष बंसल, राजेश आहूजा मौजूद रहे।

तीन ब्रह्माकुमारी बहनों को मिली डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी

शिव आमंत्रण, मुलुंड/मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ मुलुंड सबजोन की समर्पित तीन ब्रह्माकुमारी बहनें बीके लाजवंती, बीके सरला और बीके मीरा को 'डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी' की डिग्री से इंटरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूमैनिटी, हेल्थ, साइंस और पीस, कैलिफोर्निया, अमेरिका द्वारा प्रदान की गई। कार्यक्रम होटल साउथ एवेन्यू, 9, 1 साउथ तुकोगंज, इंदौर, मध्य प्रदेश में आयोजित किया गया। यूनिवर्सिटी के बोर्ड ने खास इन बहनों को कोरोनाकाल में अनेक लोगों की सेवा करने पर प्रशंसा की गई। ऐसे समय पर जहां चिंता और भय का माहोल था, इन बहनों ने कई लोगों को राजयोग और गुणों की धारणा से जीवन को कैसे सशक्त बनाएं सिखाया गया।

पत्रकारों के लिए मैं स्वयं महाधिवक्ता बनूंगा: विजयवर्गीय

नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

शिव आमंत्रण, भोपाल/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के सहस्त्रबाहु नगर में नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि वे समाचार संकलन एवं प्रकाशन में राष्ट्रीय हितों का ध्यान रखें और उनके हितों की रक्षा के लिए वह स्वयं पैरोकार बनेंगे। आज पत्रकार बेचारा बन गया है। पत्रकारिता के नाम पर अनैतिक आचरण करने वाले कुछ लोगों ने आगे का स्थान हथिया लिया है और केवल कलम एवं खबर से मतलब वाला पत्रकार हाशिये पर अकेला पड़ा है। पत्रकारों की सुरक्षा एवं सुविधाओं को लेकर जायज मांग को पूरा कराने के लिए वह स्वयं उनके एडवोकेट जनरल (महाधिवक्ता) बनेंगे। इस माहौल में समाचार के चयन, प्रस्तुतीकरण में राष्ट्र एवं समाज के हितों और उस पर पड़ने वाले प्रभाव का ध्यान रखना जरूरी है।

राज्यसभा सांसद अजय प्रताप सिंह ने कहा कि सोशल मीडिया के दौर में हर कोई पत्रकार बनने का दावा करने लगा है। इसलिए समय की मांग है कि पत्रकार की परिभाषा तय होनी चाहिए और इसके बाद सुरक्षा एवं सुविधाओं की मांग को उठाया जाए। एनयूजेआई के महासचिव प्रसन्न मोहंती ने पत्रकारों के रेलवे टिकट की रियायत बहाल करने तथा राज्यों में पत्रकार अधिमान्यता समितियों का पुनर्गठन करने की मांग की। कार्यक्रम का संचालन बीके डॉक्टर रीना दीदी ने किया। कार्यक्रम में ब्रम्हाकुमारीज़ से आई कन्याओं ने ने सांस्कृतिक प्रस्तुति देकर सभागार का माहौल दिव्यता से भर दिया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके डॉक्टर रीना दीदी ने कैलाश विजयवर्गीय का संस्थान की ओर से सम्मान किया और उन्हें स्मृति चिन्ह एवं सौगात भेंट। बीके रावेन्द्र एवं बीके हेमराज सूर्यवंशी को विजयवर्गीय ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। अध्यक्षता एनयूजेआई के अध्यक्ष रास बिहारी ने की।

जयपुर] ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से दिव्य समर्पण समारोह आयोजित

आध्यात्म की राह पर चलते हुए समर्पित किया जीवन, 23 बहनें बनीं 'शिवप्रिया'

शिव आमंत्रण, जयपुर/राजस्थान। जयपुर की सड़कों पर उस समय आध्यात्म की अनूठी धारा बह निकली, जब जयपुर म्यूजियम सबजोन के वैशाली नगर सेवाकेंद्र की रजत जयंती के उपलक्ष्य में सेवाकेंद्र द्वारा 16 बग्गियों पर सवार 23 युवा बाल ब्रह्माचारिणी बहनों का कारवां निकला।

सैकड़ों की तादाद में लोगों ने जगह-जगह फूल बरसाकर उनका भव्य स्वागत किया। इस मनोरम दृश्य को देखने के लिए सड़कों पर लोग ठहर गए। सबसे पहले बग्गी में ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका तथा यूरोपियन सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी बीके जयन्ती दीदी सवार होकर गौरव बढ़ा रही थी। वैशाली नगर सेवाकेंद्र से समारोह स्थल तक तीन किलोमीटर शोभायात्रा निकाली गई। समारोह स्थल पर हजारों की तादाद में इन बहनों के दर्शन हेतु उमड़ पड़े थे। समर्पित होने वाली बहनों का भव्य स्वागत सत्कार और सजाधजा कर मंच पर बिठाया गया। सफेद साड़ी और पीली चुनरी ओढ़े बहनों का रूहानी आकर्षण हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयन्ती दीदी ने कहा कि राजस्थान की धरती वीरों और सपूतों की धरती है। यहां की संस्कृति में त्याग और तपस्या का बल पहले से ही मौजूद है। इन बेटियों ने यह जीवन अपनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि नारी समाज को बदलने का बीड़ा उठा सकती है। परमात्म ज्ञान को जीवन में धारण कर श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। वे माता-पिता धन्य हैं जो इन बेटियों को ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित किया है।

ब्रह्माकुमारीज़, जयपुर सबजोन प्रभारी बीके सुषमा दीदी ने कहा कि समर्पित होने वाली 23 बहनों में से 17 बेटियां राजस्थान की हैं। 5 बेटियां छतीसगढ़ से एवं एक आसाम से हैं। इन्हें 5 साल तक प्रशिक्षित कर फिर ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित किया जा रहा है। समर्पित होने के बाद ये सभी बहनें अलग-अलग सेवाकेन्द्रों पर जाकर ईश्वरीय सेवा की कमान संभालेंगी।

ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यकारी सचिव राजयोगी बीके मृत्युंजय ने कहा कि परमात्मा शिव माताओं-बहनों को आगे कर नई दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। संस्थान नारी शक्ति का प्रबल उदाहरण है । ये ही बेटियां एक दिन समाज को बदलेंगी । मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बीके करुणा, ग्लोबल हॉस्पिटल से राजयोगी बीके डॉ. प्रताप मिड्ढा, महादेव नगर की प्रभारी राजयोगिनी बीके चन्द्रिका दीदी, इलाहाबाद से राजयोगिनी बीके मनोरमा दीदी, राजयोगिनी बीके विजय दीदी सहित कई महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये। समर्पित होने वाली बहनों को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। इनके समर्पण की सारी रस्में पूरी की।

सभी की आंखें हो गईं नम

माता-पिता ने अपनी बेटियों को परमात्मा को साक्षी मानकर सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जब माता-पिता और भाइयों ने अपनी बहनों को सेवा के लिए समर्पित किया तब सभी की आँखें छलक गईं। बहनों को पीली चुन्नी और मुकुट के साथ सजाया गया । श्वेत वस्त्रों में ये बहनें फ़रिश्ते लग रही थीं।

समर्पण समारोह के साक्षी बने हजारों भाई-बहनें, बहनों के माता-पिता, रिश्तेदार भी आए-

सार समाचार

बच्चों ने नृत्य, ड्राइंग, पेंटिंग प्रतियोगिता में दिखाया कौशल

शिव आमंत्रण, आगरा/उप्र। आर्ट गैलरी म्यूजियम, कल्याणकारी महिला समिति की ओर से मंगलवार को 47वीं हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन आगरा क्लब में किया गया। इसमें देश की संस्कृति, कला और महिलाओं के हुनर के रंग बिखरे। शुभारंभ आकांक्षा समिति की अध्यक्ष प्रीति गुप्ता ने किया। बच्चों के लिए नृत्य व ड्राइंग पेंटिंग प्रतियोगिता हुई। ब्रह्माकुमारीज आर्ट गैलेरी म्यूज़ियम ने आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत मेले में कई बहनों को ईश्वरीय संदेश, साहित्य दिया। मेले में बी.के संगीता, बीके गीता ने 125 स्टॉल पर जाकर ईश्वरीय संदेश दिया। इस दौरान कई भाई-बहनों ने राजयोग मेडीटेशन सीखने की इच्छा जताई।

टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप ने बीके बहनों को किया सम्मानित

शिव आमंत्रण, मुंबई। जुहू नोवोटेल होटल में टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में नवीनतापूर्ण उपक्रम करते दिशादर्शी कार्य करने वाले 27 व्यक्तियों को केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री, भारत सरकार रामदास बंडु आठवले द्वारा टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप के महाराष्ट्र टाइम्स ट्रेंड सेंटर्स 2022 पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसमें भारत के प्राचीन राजयोग का विगत 33 वर्षों से प्रसार-प्रचार करनेवाले अहमदनगर निवासी डॉ. बीके दीपक को टाइम्स ऑफ इंडिया पुरस्कार-2022 से सम्मानित किया गया। अभिनेता आदिनाथ कोठारे, बीके प्रतिभा भी उपस्थित रहे।

अनदेखा भारत साइकिल यात्रा से दिया धरोहरों को बचाने का संदेश

शिव आमंत्रण, गया/बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अनदेखा भारत साइकिल यात्रा निकाली गई। इसके माध्यम से महाबोधि सोसाइटी, शंकराचार्य मठ, विष्णुपद मंदिर, सेंट्रल बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स, मेडिकल कॉलेज, एयरपोर्ट, स्कूल और गांव गांव में जन-जन को संदेश दिया गया। महाबोधि सोसायटी में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद समाज बीटीएमसी सचिव एन. दोरगे, श्रीलंका मंदिर भंते राहुल, तिब्बती मंदिर भंते तेंजिम लामा, कैलाश, बोधगया मठ शंकराचार्य शतानंद गिरि, बीके प्रशांति, बीके प्रवीण, बीके गीता, बीके सुनीता, बीके प्रतिमा।

विश्व परिवर्तन कर रही संस्था: राज्यपाल

शिव आमंत्रण, मुलुंड/मुंबई। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलुंड सबजोन की ओर से दयानंद स्कूल ग्राउंड, चंदन बाग में बाल दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत दया-करुणा द्वारा सामाजिक और आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि भारत के प्रत्येक घर में शांति और समृद्धि लाना है। ब्रह्माकुमारीज़ मुलुंड सबजोन द्वारा तैयार की गई स्मारिका में अमृत महोत्सव अभियान के उद्देश्य को पूरा किया गया है। संस्था ने सभी जाति, पंथ, धर्म, क्षेत्र की प्रत्येक आत्मा को आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से सशक्त बनाने की कोशिश की है। बीके भाई-बहनों ने 'एक ईश्वर, एक परिवार और एक धर्म' के संदेश को समाज के सभी कोनों में फैलाया है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य किया जा रहा है। मनुष्य अपनी मानसिक कमजोरियों को समाप्त करें और पवित्र स्पंदनों को प्रसारित करना सीखकर सभी को लाभ दें। राजयोग ध्यान उस क्षमता को मजबूत करता है। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि खुशहाल जीवन के लिए दया और करुणा आवश्यक है। तभी हम श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं। मुलुंड सबजोन की प्रभारी बीके डॉ. गोदावरी दीदी ने कहा कि मनुष्य का संबंध दया और करुणा आदि मूल्यों पर आधारित है। जब तक हर मनुष्य स्वयं की आध्यात्मिक प्रगति नहीं करेगा, तब तक हमारा विश्व इन खूबसूरत भावनाओं से सम्पन्न नहीं बन सकता है। बीके सचिन, बीके लाजवंती दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राज्यपाल ने वर्ष 2022-23 के शैक्षणिक, खेल, कला तथा संस्कृति में उत्कृष्ट योगदान के लिए विशेष विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया।

विद्यार्थी मोबाइल और सोशल मीडिया में व्यर्थ समय न गंवाएं: बीके अदिति

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग। विद्यार्थी जीवन वह स्वर्णिम काल होता है जबकि हम अपने भविष्य को संवार सकते हैं। इस बहुमूल्य समय को मोबाईल, इन्टरनेट और सोशल मीडिया में व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। बहुत ज्यादा इन बातों में व्यस्त रहने से हमारी एकाग्रता पर भी असर होता है। मोबाईल का उपयोग सीमित होना चाहिए। यह विचार बीके अदिति दीदी ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर रायपुर में एकत्रित एन.सी.सी. के बच्चों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तामासिजीवनी (आरंग) के बच्चे शान्ति सरोवर देखने आए थे। एनसीसी में भाग लेने से जीवन में अनुशासन आता है। इससे आगे चलकर जीवन में बहुत से फायदे होने वाले हैं। आप सभी देश के उज्जवल भविष्य हो। माता-पिता को ही नहीं बल्कि देश को भी आपसे बहुत अपेक्षाएं हैं।

यौगिक खेती के बारे में बताया

शिव आमंत्रण, सोनीपत/हरियाणा। सरकार तथा जिला प्रबंधक द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण हेतु कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ सेक्टर-15 सोनीपत द्वारा शाश्वत यौगिक खेती का स्टाल भी लगाया गया। इसमें डीसी ललित सिवाच एग्रीकल्चर विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. अनिल सहरावत ने अतिथि के रूप में भाग लिया। ब्रह्माकुमारी प्रमोद दीदी ने सभी किसानों को कर्मों की खेती और बिना किसी फर्टिलाइजर के की जाने वाली यौगिक खेती से सभी को रुबरु कराया। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित की गई इस नई पद्धति से आज हजारों किसान लाभ लेकर खेती कर रहे हैं और अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। संस्थान यौगिक खेती के साथ किसानों और गांवों के कल्याण के लिए कई अभियान चला रहा है। गांवों में नशामुक्ति और गोकुल ग्राम जैसे अभियान चलाए जा रहे हैं।

पढ़ेगा-खेलेगा तो खिलेगा इंडिया कार्यक्रम हुआ

शिव आमंत्रण, कादमा/हरियाणा। विद्यार्थी जीवन व खिलाड़ियों के लिए मेडिटेशन सबसे ज्यादा जरूरी है। खेल व पढ़ाई एक साधना है। जैसे एक योगी साधना करता है, वैसे ही विद्यार्थी जीवन और खेल में खिलाड़ी को अपने लक्ष्य के प्रति मेडिटेशन के साथ मेंटल और फिजिकल साधना करनी होगी, तभी सफलता मिलेगी।

यह उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ की कादमा शाखा के तत्वावधान में रामबास स्थित ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में 'पढ़ेगा, खेलेगा तो खिलेगा इंडिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ग्लोबल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर माउंट आबू से पधारे राजयोगी बीके महेंद्रपाल ने बतौर मुख्य वक्ता व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन में आध्यात्म व मेडिटेशन अपनाते हैं तो उन्हें काफी फायदा होगा। चरखी दादरी नगर परिषद के चेयरमैन बक्शी राम सैनी ने कहा कि अगर हम जीवन में आध्यात्मिक व नैतिक मूल्य धारण कर लें तो वह दिन दूर नहीं भारत फिर से सोने की चिड़िया कहलाएगा।

झोझूकलां खंड क्षेत्रीय प्रभारी बीके वसुधा ने कहा कि स्वस्थिति में स्थित होकर परमात्म स्मृति से अपने लक्ष्य पर केंद्रित होते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता आपके चरण चूमेगी। भीम अवॉर्डी कुमारी रितु तिवाला ने कहा कि आज हर माता-पिता को बेटियों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करना चाहिए। बेटी हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर सकती है। बस उनको उचित माहौल और मार्गदर्शन मिलना चाहिए। विश्वव्यापी ब्रह्माकुमारीज संस्था जो बहनों द्वारा संचालित है यह इसका जीता जागता उदाहरण है। विश्वविद्यालय में टॉप स्थान प्राप्त करने पर कुमारी पूनम, मीरा, प्रियंका, प्रीति, निशा, आरजू तथा खेलों में राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर नाम रोशन करने वाली कुमारी पूजा पिचोपा, कुमारी अंजली निहालगढ़ आदि को स्मृति चिन्ह पगड़ी पटका आदि पहनाकर सम्मानित किया।

बीके सविता को नारी शक्ति सम्मान

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग। समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए राजधानी की विभिन्न महिलाओं को स्योर सामाजिक संस्था की ओर से नारी शक्ति सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्रशासक सेवा प्रभाग की इन्दौर जोन की क्षेत्रीय समन्वयक बीके सविता को नारी शक्ति सम्मान देकर उनकी सेवाओं की सराहना की गई। उक्त सम्मान समारोह में लोकसभा सांसद विजय बघेल, पण्डित हरिशंकर शुक्ल महाविद्यालय की प्राचार्या ममता शर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं सदस्य छ.ग. राज्य प्रान्तीय जवाबदेही प्राधिकार रामकली यादव, सायबर एक्सपर्ट सोनाली गुहा, मितान सेवा समिति की अध्यक्ष विद्या राजपूत स्योर संस्था के अध्यक्ष देवदत्त साहू और संयोजिका नेहा ठाकुर आदि उपस्थित थीं।

राबर्टगंज में नवनिर्मित प्रभु उपहार भवन समाज को समर्पित

शिव आमंत्रण, राबर्टगंज/सोनभद्र/उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित प्रभु वरदानी भवन का उद्घाटन पूर्वी उप्र एवं पश्चिमी जोन की जोनल डायरेक्टर राजयोगिनी सुरेंद्र दीदी द्वारा किया गया। इसके पूर्व पूरे शहर में भव्य रैली एवं झांकी निकाली गई। कार्यक्रम में बीके सुरेंद्र दीदी ने कहा कि यह सेवाकेंद्र यहां आने वाले मनुष्य आत्माओं को ईश्वरीय गुण और शक्तियों से संपन्न बनाएगा। इस अवसर पर एक शांति मार्च एवं चैतन्य झांकी का भ्रमण कर के लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया गया। शोभायात्रा में पूर्वी उप्र के विभिन्न जनपदों से पधारे संस्था से जुड़े लोगों ने भाग लिया। शांति यात्रा में नगर के गणमान्य नागरिकों के साथ विजय कुमार जैन, रविंद्र केशरी, कृष्ण मुरारी गुप्ता, विमलेश द्विवेदी, डॉ अनुपमा सिंह ने भाग लिया। वाराणसी से पधारे बीके दीपेंद्र, बीके विपिन के निर्देशन में यात्रा निकाली गई। स्थानीय सेवाकेंद्र की संचालिका बीके सुमन ने बताया कि यहां समाज में शांति सद्भावना एवं मानवीय मूल्यों के विकास के लिए प्रातः एवं सायं राजयोग मेडिटेशन एवं ईश्वरीय महावाक्य का अनुस्रवण होगा। मिर्जापुर सेवाकेंद्र संचालिका बीके बिंदु, बीके प्रतिभा, बीके सीता, बीके सरोज, बीके गोपाल, बीके अवधेश, बीके डॉ. बीके हरेंद्र सहित बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद रहे।

एक-दो के विचारों को स्वीकार कर
आदर दो तो सब नमस्कार करेंगे

शक्तिशाली मन ही शक्तिशाली संकल्प कर सकता है

- उप्र के मुख्य सचिव की प्रेरणा से संकल्प से सिद्धी कार्यक्रम हुआ, मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी ने बताए सफलता के मंत्र

शिव आमंत्रण, लखनऊ/उप्र। उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा द्वारा विधानसभा के लोक जीवन में संकल्प से सिद्धि विषय पर व्याख्यान माला आयोजित की गई। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचीं दुनियाभर में आध्यात्मिकता की अलख जगाने वाली नारी शक्ति सम्मान प्राप्त मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि विधि से ही सिद्धि प्राप्त होती है। हमारे संकल्पों में शक्ति तभी भरती है, जब हमारा मन और बुद्धि एकमत होकर पूर्ण शक्ति के साथ अपने संकल्प रचता है। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए उसका शुद्ध होना आवश्यक है। जो संकल्प हम बार-बार करेंगे वही सिद्ध हो जाएंगे, तो हमें यह निर्णय खुद करना है कि हमें सकारात्मक संकल्प करने हैं या निगेटिव। अपने कर्म के आधार पर अपना भाग्य हम बना सकते हैं संकल्प से सृष्टि, संकल्प से संस्कार बनते हैं। क्रोध एवं दूसरों के बारे में निगेटिव बात बोलना हमारे आस पास के वायुमंडल और स्वयं के वाइब्रेशंस को नीचे ले आते हैं। यदि हम अपने घर में अपने संकल्पों की शुद्धि करके प्रकाश करते हैं, अपने घर का ऐसा माहौल बनाते हैं कि वहां कोई भी आए तो उसे आराम और सुकून का एहसास हो। राजयोग के माध्यम से हम अपने मन में आने वाले व्यवधानों जैसे काम, क्रोध, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्था आदि से दूर रहते हुए, शुद्ध संकल्पों पर पूरी शक्ति के साथ कार्य करें। ब्रह्माकुमारीज़ गोमती नगर व दयाल ग्रुप ऑफ कंपनीज के संयुक्त प्रयासों द्वारा सुशांत गोल्फ सिटी, दयालबाग हॉल में भी अध्यात्म के द्वारा अनिश्चिता पर विजय विषय पर कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ब्रह्माकुमारी तारा का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, शिवपुर/मप्र। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे सात दिवसीय कार्यक्रम के समापन पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिवपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके तारा बहन का सम्मान किया गया। मध्य प्रदेश स्थापना दिवस के दौरान नशा मुक्ति कार्यक्रम एवं जागरूकता रैली तथा ऐसे ही अन्य सामाजिक तथा राष्ट्रीय हित में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किए जा रहे कार्यों हेतु कलेक्टर शिवम वर्मा ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। इस मौके पर पूर्व विधायक दुर्गालाल विजय, बीजेपी जिला अध्यक्ष सुरेंद्र जाट, नगर पालिका अध्यक्ष रेनू अजीत गर्ग, जिला जेल शिवपुर के जेलर मोरियाजी एवं अन्य सम्मानीय अधिकारियों एवं अनेक नागरिक उपस्थिति रहे।

सारनाथ में मनाया बाल दिवस

शिव आमंत्रण, सारनाथ/बनारस/उप। ब्रह्माकुमारीज के क्षेत्रीय कार्यालय सारनाथ में बाल दिवस मनाया गया। संस्था के सारनाथ स्थित ग्लोबल लाईट हाउस के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बच्चों ने अपनी भावभीनी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त दिलीप सोनकर ने कहा कि बच्चे ही देश के भविष्य हैं। इनकी शारीरिक-आर्थिक स्थिति अच्छी होगी, स्वास्थ्य और शिक्षा अच्छी मिलेगी तो देश का भविष्य अच्छा होगा। अतः जरूरत है इन्हें बेहतर व्यवस्था प्रदान करने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में मिसेज इंडिया खादी 2022 विंकल शुक्ला ने कहा कि अपने लक्ष्य के प्रति सदा दृढ़ संकल्पित रहकर आगे बढ़े। संस्था के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी बीके दीपेन्द्र ने बच्चों को कच्ची मिट्टी के रूप में परिभाषित करते हुए उनके जीवन को यथार्थ रूप में ढालने की जरूरत पर बल दिया। संस्था के पूर्वांचल मीडिया प्रभारी बीके विपिन ने बच्चों को कर्तव्य पथ की याद दिलाते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस मौके पर बीके राधिका, बीके अमिता, कु. चांदनी श्रीवास्तव, बीके राजू, गंगाधर, अजीत, अशोक, दीपक भाई सहित स्कूलों के प्राचार्या व शिक्षकगण मौजूद रहे।

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह पहुंचे भागवत कथा में

शिव आमंत्रण, बेगूसराय/बिहार। सात दिवसीय श्रीमद्भागवत गीता के आध्यात्मिक रहस्य कार्यक्रम का आयोजन बेगूसराय के तेघरा और मोहनपुर में संपन्न हुआ। इसमें केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह, विधायक कुंदन सिंह, बीजेपी और आरएसएस प्रवक्ता राकेश कुमार सिन्हा भी पधारे हुए थे। कथा में राजयोगिनी भागवताचार्य ब्रह्माकुमारी कंचन बहन ने कहा कि सभी धर्मों के धर्म पिता और महापुरुषों ने भी ईश्वर एक है और वह निराकार है को माना है। कथा में श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं का श्रवण पान कराया गया। इनके द्वारा संदेश दिया गया है कि श्रीकृष्ण का माखन चुराना हमें संदेश देता है कि हमें गुण रूपी माखन खाना है, ज्ञानरूपी माखन खाना है तभी हमें श्रीकृष्ण की नगरी का वास मिलेगा। जब तक हम अभिमान की मटकी फोड़ेंगे नहीं तब तक हम औरों की विशेषता नहीं देख पाएंगे। गोवंश बचेगा, तभी हमारी संस्कृति बचेगी। हम अपने जीवन को सात्विकता से जोड़ें, क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन।

बच्चों को क्विज प्रतियोगिता से बताया नैतिक मूल्यों का महत्व

शिव आमंत्रण, अंबिकापुर/छग। ब्रह्माकुमारीज़ के नव विश्व भवन चोपड़ापारा में चमत्कार मेरे विचारों का विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बच्चों ने गीत-संगीत, नृत्य, खेल, प्रेरणायक नाटक आदि अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। नैतिक मूल्यों पर क्विज कराया गया। सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका बीके विद्या दीदी ने बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुये कहा कि आपके मन के अन्दर बहुत सारी शक्ति है, बस उसे जागृत करने की जरूरत है। आपने जो लक्ष्य रखा है उसका स्वप्न देखो, उसके लिये कठिन परिश्रम करो और जो भी परीक्षाएं आएं उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ो। बीके साक्षी ने राजयोग मेडिटेशन का अनुभव शेयर किया।

हमारी खुशी का रिमोट हमारे ही पास हो: बीके शिवानी

शिव आमंत्रण, हिसार/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के हिसार सेवाकेंद्र द्वारा गुरु जंभेश्वर विद्यालय के 'चौधरी रणजीत सिंह सभागार में 'भावात्मक भलाई के लिए जीवन में खुशी' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में पधारीं बीके शिवानी दीदी ने कहा कि हमारी खुशी किस चीज में है भौतिक वस्तुओं में, भौतिक रिश्तों में या हमारे अंदर। मान लो हमें लगा कि हमारे पास यह वस्तु होनी चाहिए और हमने उसे खरीद लिया या प्राप्त कर ली और उसी क्षण कोई अनहोनी बात हमारे सामने आ गई तो क्या हमें खुशी मिलेगी? दूसरा हमारी खुशी का रिमोट कंट्रोल किसके पास है, किसी दूसरे के पास या उस भौतिक वस्तु में, मान लो अभी हम खुश हैं और किसी ने हमारे बारे में कुछ कह दिया तो हमारी खुशी गायब हो जाती है इसका मतलब हमारी खुशी किसी दूसरे पर निर्भर करती है। खुशी तो हमारे अंदर होनी चाहिए जिसका एक ही अचूक साधन है 'सकारात्मक सोच और दूसरों के प्रति शुभ भावना'। सभी को माफ करने की क्षमता। अगर हम ऐसा करेंगे तो हमारे सभी के साथ रिश्ते मीठे और प्यारे बन जाएंगे जिससे हमें अंदरूनी तौर पर खुशी का अनुभव होगा। हमें अपने संग की तरफ भी ध्यान देना है। कहते हैं सत्संग तारे कुसंग डुबोए । कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलित द्वारा की गई और विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बीआर कंबोज ने बीके शिवानी दीदी को मोमेंटो और शॉल पहनाकर सम्मानित किया। इस मौके पर बीके रमेश, डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा, मंत्री कमल गुप्ता, विजेंद्र सिंह, प्रो. डीआर कंबोज वीसी जीजेयू मुख्य रूप से उपस्थित रहे। सभा में जीजेयू के प्रशासनिक अधिकारी, छात्र गण, मंत्री जोगीराम सिहाग, मंत्री विनोद भ्याना, प्रोफेसर छत्रपाल सिंह, मेयर गौतम सरदाना, डॉक्टर दलबीर, डॉक्टर रामभारती पीएमओ, मिस सोनिया जज हिसार मिस ज्योति शेरावत जज हिसार मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।

बुजर्गों के लिए वरदान बना 'खुशराजी जीवन'

» शिव आमंत्रण, अहमदाबाद/गुजरात। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान, आबू की सहयोगी संस्था वर्ल्ड रिन्यूवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट द्वारा अहमदाबाद के सिंगरवा क्षेत्र में ब्रह्माकुमारी से जुड़े जरूरतमंद वरिष्ठ (वानप्रस्थी) नागरिकों के लिए बनाया गया। खुशराजी जीवन भवन का उद्घाटन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी डॉ. रतनमोहिनी, गुजरात विधानसभा की स्पीकर डॉ. निमा बहन आचार्य, विधायक प्रदीप सिंह जडेजा, वल्लभ काकड़िया, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा, मेडिकल प्रभाग के सचिव बीके डॉ. बनारसी लाल, गुजरात जोन की प्रभारी बीके भारती दीदी, सह प्रभारी बीके दमयंती, संस्थान के सेक्रेटरी बीके ललित, महादेव नगर की प्रभारी बीके चन्द्रिका दीदी, गांधीनगर सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके कैलाश, सुख शांति भवन की सबजोन प्रभारी बीके नेहा तथा नवरंगपुरा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके ईशिता समेत गुजरात के वरिष्ठ लोगों के कर कमलों से किया गया। कार्यक्रम में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह जीवन बाबा की प्रत्यक्षता का आधार बनेगा, क्योंकि यहां रहने वालीं बहनों की परवरिश परमात्मा के घर से होगी। इसके लिए मैं बधाई देती हूं। गुजरात विधानसभा स्पीकर डॉ. निमा बहन आचार्य ने कहा कि यह ऐसा जीवन है जहां व्यक्ति खुश भी रहेगा और राजी भी रहेगा। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करुणा ने कहा कि दादियों का संकल्प रहा है कि बाबा के बच्चों को हमेशा सुख मिले। समय प्रमाण यह जीवन बाबा की प्रेरणा से ही बना है। जिसमें जरूरतमंद बहनों की सेवा हो सकेगी। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती बहन ने कहा कि यहां हर चीज बहुत विचार करके यथायोग्य स्थान पर बनाई गई है जो हमारे वरिष्ठ भाइयों-बहनों को बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने किया बीके सरला का सम्मान

» शिव आमंत्रण, मुलुंड/मुंबई। मुलुंड सबजोन के अंतर्गत लाइटहाउस सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी सरला बहन को 'डॉक्टरेट ऑफ फिलोसफी' के डिग्री से इंटरनेशनल ओपन यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूमेनिटी, हेल्थ, साइंस और पीस, कैलिफोर्निया, अमेरिका द्वारा सम्मानित किया गया। इसी उपलक्ष्य में थाने शहर के सावरकर नगर में कोंकण महोत्सव में पधारे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने ब्रह्माकुमारी सरला बहन का सत्कार किया। इस मौके पर विशेष रूप से वास्तु शास्त्र विशेषज्ञ बीके संदीप नेने और सावरकर नगर के नगरसेवक दिलीप बारटक्के सहित अन्य नगरसेवक एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कर्मों को बड़ी सावधानी और समझदारी से करना चाहिएः बीके डॉ. सुधा कांकड़िया

» शिव आमंत्रण, नाशिक/महाराष्ट्र। जो बोवगे, वह पाओगे यह प्रकृति का नियम है। हम जो करते हैं वह परिलक्षित होता है और प्रारब्ध के रूप में हमारे सामने आता है। पितामह भीष्म ने भी एक जन्म में अपने रास्ते में आए एक सांप को उठाया और एक तरफ फेंक दिया लेकिन यह गलती से एक कांटों के पेड़ पर गिर गया और उसका परिणाम भीष्म पितामह को भी बाणों की शय्या पर अपने प्राण त्यागने पड़े। इससे यह समझा जाता है कि हमारे कर्म भी दर्ज होते हैं और हमारे द्वारा किए गए अच्छे और बुरे कर्म संस्कार के रूप में जमा हो जाते हैं, इसलिए कर्मों को बड़ी सावधानी और समझदारी से करना चाहिए। उक्त उद्गार बीके डॉ. सुधा कांकरिया ने सेंट्रल जेल में बंदियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज़ नासिक मुख्य सेवाकेंद्र द्वारा जेल में तनाव मुक्ति व्याख्यान एवं नशा मुक्ति नाटक का आयोजन किया गया। इस दौरान बीके वसंती दीदी, अधीक्षक प्रमोद वाघ, वरिष्ठ जेल अधिकारी अशोक मालवाड, बीके दिलीप, वरिष्ठ जेल अधिकारी संतोष खरतोड़े और जेल अधिकारी संतो कोलेकर ने मुख्य रूप से मौजूद रहीं।

अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करना हमारा लक्ष्य

» शिव आमंत्रण, फैजाबाद/उप्र। फैजाबाद के प्रभु शक्ति अनुभूति भवन, चेलाछावनी सेवाकेंद्र द्वारा सात बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें शहर के जिंगल बेल एकेडमी, आईटीआई, अयोध्या, मैथोडिस्ट्स गर्ल्स इन्टर कॉलेज, आदर्श इंटर कॉलेज, राजकीय महिला पॉलीटेक्निक, राजा मोहन गर्ल्स पीजी कॉलेज, अवध इंटरनेशनल स्कूल एवं शहर के स्थानीय सेवाकेन्द्र पर आयोजित सेमीनार में बीके भाई-बहनों, विद्यार्थियों ने भाग लिया।
प्रोग्राम के डायरेक्टर बीके राम सिंगल ने कहा सात बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस जमीनी स्तर से जुड़ा एक ऐसा वैश्विक अभियान है जिसमें हर व्यक्ति सहभागी हो सकता है। एक स्वस्थ और सुंदर भविष्य बनाने की दिशा में यह दीर्घकालिक प्रयास है। वसुधैव कुटुम्बकम् की तर्ज पर संकल्पित इस अभियान से बच्चे, युवा, वृद्ध, व्यवसायी, महिलाएं सभी जुड़ सकते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो स्वयं के लिए, समाज व अन्य लोगों के प्रति कुछ अच्छा करना चाहते हैं पर उन्हें समझ नहीं आता कि क्या करें, कैसे करें। यह कार्यक्रम उन्हें सुगम दिशा निर्देश देता है। साथ ही सेविन बिलियन एक्ट ऑफ गुडनेस किसी भी कार्यक्रम का एक अंग या फिर उसका पूरक हो सकता है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है, लोगों में इतना उत्साह पैदा करना कि वह अपने दायित्व, क्षमता और जिम्मेदारियों से भी आगे बढ़कर, कुछ अच्छा कर्म (सत्कर्म) करें और उससे प्राप्त होने वाले सुख व आनंद का अनुभव करें। ऐसी ही खुशी से भरपूर विश्व के सभी लोगों की श्रृंखला तैयार करना ही लक्ष्य है।

हर आत्मा का एक शाश्वत संबंध है

» शिव आमंत्रण, मुरम खड़ा/रूस। ओका नदी के तट पर प्राचीन रूसी शहर मुरम खड़ा है, जिसके नाम में हिंदी में दो शब्द हैं जिनका गहरा अर्थ है। भारत की आजादी के अमृत महोत्सव और रूस के साथ राजनयिक संबंधों की स्थापना के लिए समर्पित मुरम में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें आध्यात्मिक विकास केंद्र की प्रमुख एंटोनिना कज़ाकोवा ने कहा कि हर आत्मा का एक शाश्वत संबंध है, जो हमेशा प्रेम और शक्ति से भरा रहता है और किसी भी क्षण आत्मा का समर्थन कर सकता है - चाहे कुछ भी हो जाए। अपने आंतरिक प्रकाश, प्रेम और शक्ति को बनाए रखने का साहस देता है।

अलौकिक समर्पण: नौ कन्याएं बनीं 'शिव शक्तियां'

» शिव आमंत्रण, कुरुक्षेत्र/हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति धाम में दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से पधारीं अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका जयंती दीदी, पंजाब जोन के इंचार्ज प्रेमलता दीदी, बीके आत्मप्रकाश भाई, बीके मोहन सिंघल, बीके हंसा बहन और मुख्य अतिथि के रूप में विधायक सुभाष सुधा उपस्थित रहे।
इस अवसर पर नौ कन्याओं बीके राधा, बीके सुदर्शन, बीके शिवानी, बीके लता, बीके मधु, बीके सुनीता, बीके रेखा, बीके विद्या का दिव्य अलौकिक समर्पण किया गया।
समारोह में बीके जयंती दीदी ने कहा कि ब्रम्हाकुमारी जीवन कोई साधारण जीवन नहीं है। यह महान जीवन है जब हम अपना जीवन परमपिता परमात्मा को अर्पित कर देते हैं और उसकी दी हुई श्रीमत पर चलते हैं तो व्यक्ति सभी चिंताओं से मुक्त हो जाता है। विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें लोगों को बता रहीं है कि कैसे उनके परिवार में सुख-शांति आ सकती है। दुनिया में हर कोई किसी बीमारी का इलाज कर सकता है लेकिन सुख-शांति कोई भी नहीं दे सकता है जो हमें इन बहनों के द्वारा प्रेरणा मिलती है। कुरुक्षेत्र सेवाकेंद्र प्रभारी सरोज दीदी ने स्वागत भाषण दिया। जोन इंचार्ज बीके प्रेमलता दीदी ने सभी कन्याओं को और उनके माता-पिता के लिए कहा कि आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है। कैसे यह कन्याएं अपना तन, मन ,धन परमपिता परमात्मा को अर्पित कर जन-जन की सेवाएं कर रही हैं और अनेक आत्माओं का कल्याण कर रही है यह सब बहनें ज्ञानगंगा हैं।
चंडीगढ़ से आए बीके अनिल भाई ने गीत संगीत संध्या से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी नौ कन्याओं ने परमपिता परमात्मा निराकार को माला डालकर जीवनसाथी के रूप में स्वीकारा। इस दौरान नृत्य नाटिका से इस दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह का लक्ष्य बताया गया। इस अवसर पर आसपास के क्षेत्रों से आए दो हजार से अधिक भाई बहनों मौजूद रहे। कन्याओं के रिश्तेदार भी पहुंचे।

डोली के रूप में कन्याएं को स्टेज तक ले जाते माता-पिता और परिजन।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

पिछले अंक से क्रमशः

हमारे हर संकल्प श्रेष्ठ हों क्योंकि इससे एनर्जी पैदा होती है

श्रेष्ठ संकल्पों का प्रयोग माहौल बनायें खुशनुमा

स्थूल खजाने को भी छोटी छोटी बातों में नष्ट नहीं किया जा सकता। खुशी को खजाना माने तो छोटी छोटी बातों से इस खजानें को नष्ट नहीं किया जा सकता। छोटी छोटी बातो से इस महान खजानें को नष्ट नहीं किया जा सकता। ये इम्पोर्टेंट चीज हैं। इसी पर सारे जीवन का अधार रहेगा। खुशी बहुत बड़ी खुराक हैं। खुश रहने वाला व्यक्ति बिमार भी कम हैं। आजकल तो सारे डॉक्टर, सारी मेडीकल साइंस ये कहती हैं की ज़्यादातर रोग मानसीक तनाव से, चींता से, परेशानीयों से होते हैं। तो मन अगर बहुत खुश रहेगा तो रोग आऐगे नहीं।

खुराक हैं बहुत बड़ी हमें याद रखना है हमारे हर संकल्प से एर्न पैदा होती है। संसार की सबसे इम्पोर्टेंट बात दुनिया में किसी को पता नहीं हमारे हर संकल्प से एर्न पैदा होती है। ये बात भुलता हैं हर व्यक्ति। अगर हम उल्टे संकल्प करेंगे तो कमज़ोर एर्न पैदा होगी जो हमारे ब्रेन को कमज़ोर करेगी, बीमारियों को बढाऐगी, समस्याओं को बढाऐगी और अगर हम पावरफुल संकल्प करे तो हाई एर्न पैदा करेंगी। क्योंकी सारा खेल दिमाग से हैं। इसलिए बहुत ध्यान देना है हमारे संकलप श्रेष्ठ हो। हमारे पास श्रेष्ठ संकल्पो का भंडार है, रोज मुरली से मिलता हैं और अगर मुरली की बातें भुल भी जाए तो स्वमान से। किसी भी एक स्वमान का अभ्यास करेंगे ब्रेन को एर्न जाऐगी बहुत कुछ ठीक होगा। खुशी हमें कायम रखनी हैं। बाबा का बहुत सुदंर महावाक्य याद रखेंगे समस्याएं क्या है? समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना हैं।

मन कमजोर हैं छोटी छोटी बातें भी समस्या लगती हैं। मन शक्तिशाली हैं, बड़ी बातें भी छोटी लगती है। गुस्सा भी कमज़ोर मन वाले को आता है। गुस्से वाला अपने को बड़ा पावरफुल सोचता है पर होता हैं वो कमज़ोर। गुस्सा कमज़ोर मन की पहचान है। पावरफुल वो है जो दूसरे के क्रोध को सुनकर सहन कर ले। पावरफुल व्यक्ति वही है जो अपने को शांत कर ले। खुशी स्वयं भगवान ने हमें दी है। ईश्वरीय खजाने देखकर, ईश्वरीय ज्ञान देखकर हमारे मन को खुश कर दिया। ज्ञान मिलते ही खुशी बहुत बढ़ जाती है। पहली बात है खुश रहने की खुशी दी हैं भगवान ने और छीन्ने वाले हैं मनुष्य। बड़ा तो सर्वशक्तिमान शिव बाबा ही है ना।

मेरी खुशी स्वयं भगवान से मिली हुई गिफ्ट है, इसको कोई मनुष्य छीन नहीं सकता तो काफ़ी बल मिल जाएगा। बातें तो आएंगी। दूसरी बात बातें तो आती है और चली जाती हैं। जो बातें आयी है वो जा रही हैं और जाएंगी, जाने दो। मनुष्य हर बात पे रिएक्ट करता है, पकड़ लेता है उसको, सकंलप करने लगता है। ये हैं बातों को पकड़ के बैठ जाना। जब तक बातों को पकड़ के बैठे रहेगें खुशी गुम रहेगी तो हमें बातों को जाने देना है।बातें बड़ी या मेरी खुशी बड़ी? मेरी खुशी बड़ी है बातें छोटी हैं। बाबा ने भी अपने महावाक्यों में कहा था बातें बड़ी नहीं होती तुन सोच सोच कर उन्हें बड़ा कर देते हो। ये सबकी आदत है। जितना कम सोचेंगे बातें खत्म।

सोचने से बातें लगती हैं बड़ीं...

जितना सोचेंगे हमें बातें बड़ी लगेगी, होती नहीं उतनी बड़ी और सोच सोच कर हम परेशान हो जाऐंगे और कभी तो ऐसा होता है बहुत सोच के दुःखी हो गए और जब पता चला तीन दिन के बाद तो पता चलता है कि बात तो थी ही नहीं। तीन दिन बेकार कर दिये, परेशान रहे सोच सोचकर, बात तो थी ही नहीं, किसी ने ऐसे ही कह दी थीं। कुछ बातें जीवन में बहुत पक्की कर देनी हैं, एक धारणा हमें याद रखनी है स्वीकार करना। बहुत चीज़ें ऐसी होती रहेगी आगे चलकर जो मनुष्य के मन चित्त स्वीकार करना ही पड़ेगा। रोने से काम नहीं चलेगा नहीं तो अपनी भी हालत बिगड़ जाऐगी। जिन चीज़ों को हम बदल नहीं सकते उन्हें स्वीकार कर ले। जितना जल्दी से जल्दी हो अपने मनोस्थिति को नॉर्मल बनाना है। आजकल संसार का खेल बिगड़ता जा रहा है, हम जिवनाश के किनारे आ पहुँचे है। दोनों सम्प्रदायों की लड़ाई की तैयारी अंदर ही अंदर फुल फोर्स से हो चुकी है।

विचारों में स्पष्टता से ही मोहजाल में फंसने से बचेंगे

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

समाने की शक्ति से हम अपने जीवन मूल्य को समाज में बढ़ा सकते हैं

कई बार कई लोग किसी बात से परेशान होते हैं और वह समझते हैं कि अपने किसी दोस्त को सुनाने से वह कोई हल सुझायेगा और वह अपने दोस्त को बड़े विश्वास के साथ सुनाता है और उसका दोस्त वायदा करता है कि वह उसकी बात किसी से नहीं कहेगा। अब उस दोस्त का भी एक खास दोस्त होता है जिसे वह इस दोस्त की बात सुनाते हुए कहता है कि आप किसी से कहना नहीं और इस तरह वह बात धीरे-धीरे फैल जाती और जब वह बात घूम कर इसी व्यक्ति के पास आती है तो उसे बड़ा धक्का लगता है। वह सोचता है कि आज की दुनिया में कोई विश्वास पात्र नहीं हैं, किसी पर भरोसा नहीं कर सकते। लेकिन सोचने की बात तो यह है कि वह व्यक्ति खुद की

पर्सनल बात अपने पेट में नहीं समा सका और उनके बत्तीस दातों के बीच से निकल गई तो क्या गैरंटी है कि उसके दोस्त के पेट से नहीं निकलेगी। उसकी तो अपनी बात भी नहीं है, वह तो दूसरों को सुनायेगा ही। कहने का भाव यही है कि आज की दुनिया में कोई किसी की बात अपने में समा नहीं सकता। समाने की शक्ति से ही व्यक्ति सबका प्रिय पात्र बन जाता है। हृदय की विशालता और गम्भीरता के गुण को धारण करने से हम समाने की शक्ति को विकसित कर सकते हैं और इससे ईर्ष्या रूपी दुर्गुण को जीवन में से समाप्त कर सकते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए और सबका प्रिय बनने के लिए या सबका विश्वास तने के लिए इस शक्ति को धारण करने की बहुत आवश्यकता है।

3. परखने की शक्ति को विकसित करने के लिए ज्ञानयुक्त या विवेकयुक्त बुद्धि और विचारों की स्पष्ता चाहिए जिससे मोह के महाजाल में फंसने से बच जायेंगे।

आज के बदलते हुए परिवेश में मनुष्यों की वृत्तियों में भी बहुत परिवर्तन होता जा रहा है। ऐसे समय में कई बार लोग जुबान से बहुत मीठे होते हैं और अपनी मीठी-मीठी बातों में दूसरों को प्रभावित कर लेते हैं। जो लोग उनकी बातों पर विश्वास कर लेते हैं उन्हें अंत में धोखा मिल जाता हैं। तब वह बहुत दुःखी हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि आज व्यक्ति में परख शक्ति की कमी है। कलियुग के इस दौर में व्यक्ति को एक हेस के समान बुद्धि धारण करनी चाहिए। जैसे हंस नीर और क्षीर को अच्छी तरह परख लेता, मोती और कंकड़ को परखते हुए अलग कर देता, वैसे ही मनुष्यों को अपनी बुद्धि सपष्ट और स्वच्छ बनानी होगी। जिस तरह एक जौहरी असली और नकली हीरे को परख कर उसकी कीमत निर्धारित करता है, क्योंकि उसके पास हीरे का ज्ञान है। उसी तरह परखने की शक्ति से व्यक्ति किसी भी प्रकार के धोखे से बचकर जीवन में आगे बढ़ सकता है, परन्तु उसके लिए बुद्धि को पवित्र और ज्ञानयुक्त बनाने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक ज्ञान या विवेक ही हमारी बुद्धि में ऐसी समझ भरकर उसमें से व्यर्थ या नकारात्मकता का किचड़ा साफ कर उसकी धार को तेज़ करता है जो वह चालाकी करने वाले मनुष्य की बातों में छिपे हुए भाव को समझ लेता है। इस बात को और स्पष्ट करने के लिए एक कहानी प्रस्तुत है:-

अपनी अवस्था की चेकिंग करनी है

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट

यदि चिंता है तो मतलब किसी न किसी धारण या मर्यादा में कमी है

चेक करें, मेरी व्यवस्था आज सारे दिन भर कैसी रही? एक बच्चा अपने माँ के साथ घूम रहा है सागर तट पर उसकी चप्पल सागर की लहरें आती और बहा कर ले जाती है। माँ लिखती हैं अपनी उंगली से रेत पर सागर चोर हैं। सागर के दूसरे तट पर एक मछुआरा मछलियां पकड़ रहा है और मछलियाँ मिल गई वो मछुआरा सागर की तट रेत पर अपने उंगलियों से सागर पालनहार हैं। इस तट पर एक व्यक्ति सागर में डूबकर मर जाता है, माँ लिखती है सागर हत्यारा है, दूसरे तट पर एक बूढ़ा व्यक्ति कमर झुका झुका कर चल रहा है पैसे नहीं है अचानक एक सीप और उसमें एक बहुमूल्य मोती मिलता हैं लिखता है सागर तुम महादानी हो।

थोड़ी देर के बाद इस तट पर और उस तट पर सागर की विशाल लहरें आती हैं और सब कुछ मिटाकर चली जाती है, सागर को किसी से कोई मतलब नहीं तुम स्तुति करो या निंदा करो सागर अपने स्थिति में अडोल है, अपने स्थिति में अचल है। स्थिति कैसी हो ऐसी अचल, क्योंकि कहने वाले तो कुछ ना कुछ कहेंगे ज़रूर, कोई कुछ कहेगा कोई कुछ कहेगा सागर तो अपने मस्ती में मगन हैं, लहरें आ रही हैं लहरें जा रही है जो लिखना है लिखो, सागर की विराट लहर आएगी और वो सब कुछ मिटाकर चली जाएगी। सागर कि संतान सागर समान। तो स्थिति कैसी हो सागर समान बाप समान अचल अडोल। हिले नहीं, छोटी छोटी बातों से घबराए नहीं, उसने ऐसा क्यों किया इसने ऐसा क्यों किया, यह ऐसा व्यवहार क्यों करते, इन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। बाबा ने कहा बाप को ये भाषा पसंद नहीं। वस्तुएं हमारी स्थिति से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। वस्तु आएगी और जाएगी, व्यक्ति भी शायद आएंगे और जाएंगे लेकिन हमारी स्थिति हमारे साथ रहेगी इसलिए स्थिति को ऊंचा रखना है।

6 बाबा ने कहा ग़ाज़ी नहीं बनना है तुमको, दूसरों को दुख तो नहीं दिया। किसी को दुख देना, षडयंत्र करना, कपट करना। दुख देंगे तो दुखी होकर मरेंगे। किसी एक देश का राजा अत्यंत क्रूर प्रवृत्ति का था, बोहोत तानाशाह, लोग त्रस्त थे दुखी थे और अचानक एक दिन राजा का व्यवहार ही बदल गया और सबसे बहुत अच्छे से बातें करने लगा लोगों को आश्चर्य हुआ ये क्या हुआ परंतु किसी को पूछने की हिम्मत नहीं हुई और अचानक रंग बदल दिया।

कुछ हिम्मत करने के बाद कुछ समय के बाद एक मंत्री ने पूछा कि ये जो परिवर्तन आया कैसा, तो राजा ने कहा ये परिवर्तन मुझमें आया मैं मानता हूँ और उसका एक कारण है मैं अपने राज्य से घूम रहा था देखा एक कुत्ता एक लोमड़ी का पीछा कर रहा है और उस लोमड़ी का पैर उसने पकड़ा और लोमड़ी तो चली गई नीचे परंतु पैर को घायल कर दिया हमेशा के लिए उसको अपाहिज बना दिया मैं उसके पीछे पीछे गया एक व्यक्ति खड़ा था ना उस व्यक्ति ने पत्थर उठाया और ज़ोर से उस कुत्ते को मारा उस कुत्ते का पैर टूट गया वो व्यक्ति आगे बढ़ा आगे बढ़ते ही घोड़े पर चढ़ा घोड़े ने एक लात मारी उस व्यक्ति का पैर टूट गया घोड़ा आगे बढ़ा और गिर गया ये सारा क्रम देखने के बाद मुझे पता चला कि मैं ये ये सब जो कर रहा हूँ ये सब वापस आएगा मेरी तरफ़ इसलिए मैंने उस दिन सोच लिया कि बस अब बहुत हो गया अब सत्कर्म करना है और जैसे ही राजा ये सब सुना रहा था वो जो मंत्री था अंदर ही अंदर कह रहा था राजा तो अब बदल गया है अब मेरे पास अफ़सर है इस राजा के विरुद्ध अब कुछ कर दुँ और इसको हरा दुँ और मैं राजा बन जाऊँ और जैसे ही मंत्री जाने लगता है गिरता है और उसकी टाँग टूट जाती है। हमें चेक करना है सारे दिन भर गां तो नहीं बने किसी को दुख तो नहीं दिया षड्यंत्र तो नहीं रचा योजनाएं तो नहीं बना रहे।जो गड्ढे हम दूसरों के लिए खोदेंगे उसमें हम एक दिन खुद गिरेगें। अपने षड्यंत्र के जाल में चेतना एक दिन खुद फँस जाएगी।

बाबा जो कहते हैं उसकी जांच करें...

बाबा जो कहते हैं जाँच करो वो राइट हैं या रॉग है ऐसे ही स्वीकार नहीं करना है न मूरलीयों में कई बार आया है ये अंधश्रद्धा की ज्ञान नहीं है बस बाबा ने कह दिया और मान लिया। नहीं बाबा ने कहा जज करो जो मैं सुनाता हूँ वो राइट है यह दुनिया वाले जो सुनाते हैं वो राईट है बुद्धि लगाओ हर चीज़ का तर्क करो।वो शक की अवस्था हम पार कर चुके हैं,यहाँ शक के लिए तर्क नहीं कर रहे हैं यहाँ ज्ञान को समझने के लिए तर्क किया जा रहा है। बाबा के शब्दों में राज समाए हुए हैं। इसके लिए चिंतन की अति आवश्यकता है। ये विचार निरंतर बुद्धि में चलनी चाहिए,क्या मिला मुझे इससे, प्राप्ति क्या हुआ।हर दिन सोने से पहले बैठकर अपने किए हुए कर्मों को देखना है इसका परिणाम क्या निकला।

8-ज्ञान रत्नों का दान कितनों को दिया। सारे दिनभर अजीवनाशी जो ख़ज़ाना मिला है कितनों को दिया।ज्ञान दान करते रहना है,ज्ञान देते रहना। ज्ञान दान में जो खुशी है शायद संसार में और कोई भी स्थूल धन में वो खुशी नहीं है।मनसा से शक्तियों का दान, वानी से ज्ञान का दान,कर्मों से गुणों का दान देते रहना है। मदद करना सहयोग देना ज्ञान का दान करना।

शिक्षकों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण से समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव

- आध्यात्मिक शिक्षा से सच्ची स्वतंत्रता की ओर सम्मेलन में मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी ने दिया मंत्र

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा से सच्ची स्वतंत्रता की ओर' विषय पर एक दिवसीय सम्मेलन तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित किया गया। इसमें तीन हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया।

सेमीनार में मुख्य अतिथि केन्द्रीय शिक्षा एवं विदेश राज्यमंत्री राजकुमार रंजन सिंह ने कहा कि स्वर्णिम भारत की संरचना का आधार आंतरिक बुराइयों की समाप्ति और आध्यात्मिक जागृति है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक मूल्यनिष्ठ शिक्षा अनुकरणीय है। शिक्षकों का आध्यात्मिक सशक्तिकरण ही विद्यार्थियों तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन लायेगा। मूल्यनिष्ठ शिक्षा व राजयोग से युवाओं का जीवन नशामुक्त होगा। दिल्ली फार्मास्यूटिकल साइंस एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. रमेश गोयल ने कहा कि मानव मन और तन का उपचार करने में आध्यात्मिकता का महत्व औषधि से अधिक है। भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के महानिदेशक सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी का विश्वास एवं निश्चय कर्मयोगी बनाने का है, जो ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा से संभव है।

सुप्रसिद्ध प्रेरणादायी वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि महत्व ऊर्जा का है जो हम अपने विचारों से निर्माण करते हैं। विचारों को श्रेष्ठ, सकारात्मक बनाने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान, शिक्षा चाहिए। वर्तमान समय शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अध्यात्मिक शिक्षा विकल्प नहीं अपितु प्राथमिकता है। आध्यात्मिक ज्ञान एक संस्कार है, संस्कृति है, जिससे संसार बनता है। मन से विचार पैदा होते हैं। विचार निम्न, नकारात्मक हों तो शरीर पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयन्ती ने कहा कि शिक्षा जीवन की नींव है। ब्रह्माबाबा ने आध्यात्मिक शिक्षा एवं नारी सशक्तिकरण को आधार बनाया। शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय, ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका बीके आशा दीदी, सम्मेलन की संयोजिका बीके शुक्ला दीदी, माउंट आबू से आईं बीके शिविका, बीके सूरज ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

भुवनेश्वर में राष्ट्रपति से मुलाकात

शिव आमंत्रण, भुवनेश्वर/उड़ीसा। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ भुवनेश्वर के बीके सदस्यों की ओर से उनका अभिनंदन स्वागत किया गया। भुवनेश्वर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बी.के. लीना के नेतृत्व में वरिष्ठ बीके बहनों ने राष्ट्रपति से स्नेह मुलाकात कर स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने राजयोग ध्यान और आध्यात्म पर भी गहन चर्चा की। इस मौके पर मॉस्को में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका राजयोगिनी बी.के. सुधा भी विशेष रूप से मौजूद रहीं। साथ ही सांताक्रूज मुंबई से राजयोगिनी बी.के. कमलेश दीदी, बीजेबी नगर सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बीके तपस्विनी, यूनिट-8 सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बी.के. दुर्गेश, मंचेश्वर सेवाकेंद्र प्रभारी राजयोगिनी बी.के. मंजू, बीके संतोष, बीके राजेश, बी.के.रूपा मुख्य रूप से मौजूद रहे।

'मेडिटेशन से विचारों में आएगी सकारात्मकता'

शिव आमंत्रण, सागर/ मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सागर सेवाकेंद्र द्वारा न्यायविद प्रभाग के तहत सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें शहर के जाने-माने अधिवक्ताओं ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि सागर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अंकलेश्वर दुबे ने कहा कि हम अधिवक्तागण रोज ऐसे माहौल में रहते हैं जहां तनाव और व्यर्थ की निगेटिविटी से दिमाग भरा रहता है। दिमाग और मन जो निगेटिविटी से भरा हुआ है उसे खाली करने का एकमात्र उपाय है राजयोग मेडिटेशन जो यह ब्रह्माकुमारी बहनें सिखा रही हैं। मेडिटेशन से ही विचारों में सकारात्मकता आएगी। मैं 1995 में माउंट आबू की पावन धरा पर गया था, वह धरती का स्वर्ग है। सभी को जीवन में एक बार इस पवित्र, पावन धरा की महसूसता करने जरूर जाना चाहिए। वहाँ कि जितनी तारीफ की जाए कम है।

सेवाकेंद्र संचालिका बीके छाया दीदी ने कहा कि हम सभी परमात्मा के बैरिस्टर बच्चे हैं। आज परमात्मा की नजर आप सब पर पड़ी तभी इस आयोजन का शुभारंभ हुआ। बीके नीलम ने कहा कि परमात्मा का न्याय संसार में सर्वश्रेष्ठ और अति सुंदर होता है।

बीके संध्या ने राजयोग मेडिटेशन का आधार स्वयं की पहचान और परमात्मा की पहचान है। हम सभी शरीर नहीं हैं बल्कि इसे चलाने वाली एक चेतन शक्ति आत्मा हैं। परमात्मा की संतान हैं। माउंट आबू मुख्यालय से आए बीके कृष्णा ने बताया कि आबू वह पावन भूमि है जहां कोई भी जाए तो उसे एक दिव्य शक्ति का अनुभव होता है। इसका कारण योगबल है। शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक बीके पुष्पेंद्र, मेजर बीके गजराज सिंह, संजय पांडे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन बीके लक्ष्मी ने किया।

तमन्ना विनास का कारण, तन्मयता जीवन का विकास करती है

शिव आमंत्रण, आलीराजपुर/मप्र। तन्मयता में जीना अर्थात अपने द्वारा संपन्न प्रत्येक कार्य को पूर्ण निष्ठा के साथ सावधानीपूर्वक करना कि कर्म ही पूजा बन जाए और आत्म संतुष्टि ही परिणाम बन जाए। तन्मयता के कारण ही एकलव्य अर्जुन से भी आगे निकल गया और केवल तमन्ना के कारण ही दुर्योधन को कुलनाशक होना पड़ा। अतः तमन्ना नाश का कारण और तन्मयता ही जीवन के विकास का कारण है। यह विचार इंदौर से पधारे वरिष्ठ राजयोगी बीके नारायण भाई ने दीपा की चौकी पर स्थित ब्रह्माकुमारी सभागृह में व्यक्त किए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके माधुरी दीदी ने कहा कि रोज इस सोच के साथ उठिये कि आज क्या कर सकते हो।

मैं भगवान की पालना में पलने वाली भाग्यवान आत्मा हूं

शिव आमंत्रण, पलवल/ हरियाणा। रोज सुबह उठते ही संकल्प करें कि मैं भगवान की पालना में पलने वाली भाग्यवान आत्मा हूं। स्वयं भगवान मेरा साथ दे रहा है। मैं सृष्टि की महान आत्मा हूं। मैं शक्तिशाली निर्भय हूं। हमारा सबकॉन्शियस माइंड इन बातों को एक्सेप्ट करेगा। इस प्रयोग से निश्चिंतता आ जाएगी। जीवन में एक बार अवश्य प्रयोग करें। परमात्मा शक्तियों का संपूर्ण, समर्पण, विश्वास और भावनाएं हैं तो भगवान बंधा हुआ है हमारी मदद के लिए।

उक्त उद्गार माउंट आबू से पधारे पीस ऑफ माइंड चैनल के सुप्रसिद्ध शो समाधान के मुख्य वक्ता राजयोगी सूर्य भाई ने न्यू सोहना रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान योग मंदिर में आयोजित योग भट्टी में कही।

पलवल में सेवाकेंद्रों की निर्देशिका बीके राज दीदी ने कहा कि राजयोगी सूर्य भाई के आने से ब्रह्मा वत्सों के जीवन में ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव के प्रति लगन स्नेह और बढ़ गया।

नगर पालिका अध्यक्ष डॉ. यशपाल ने कहा कि यहां आकर मुझे जो सुखद शांति अपार आनंद का अनुभव होता है, वह अवर्णनीय है। विधायक दीपक मंगला ने कहा कि पलवल ब्रज भूमि में पहली बार सूर्य भाईजी का आना हुआ जो हमारे लिए एवं क्षेत्र की जनता के लिए भाग्य की बात है। आबू से आई बीके गीता दीदी ने बताया हमारी खुशी को छीनने वाली बातें बहुत है संसार में हल्के रहना है खुश रहना है। प्रेम, खुशी, सम्मान, शांति चाहिए तो इसे दूसरों को देना शुरू करें। बीके राजेंद्र भाई ने संचालन किया।

कार्यक्रम में जेवर से बीके लक्ष्मी दीदी, अलीगढ़ से बीके सुनीता दीदी, पलवल जवाहर नगर से बीके मनीषा दीदी, दीघोट से बीके राजबाला दीदी, न्यू कॉलोनी से बीके पूनम दीदी, कृष्णा कॉलोनी से बीके सरला दीदी, चांदहट से बीके निर्मल दीदी, हसनपुर से बीके इंद्रा दीदी, होडल से बीके शैली दीदी आदि सभी मुख्य मेहमानों का सम्मान और स्वागत किया गया। कार्यक्रम में 600 से अधिक भाई-बहिनों ने भाग लिया।

अपना अधिकारीपन सदा स्मृति में रखो
तो सर्व प्राप्तियों का अनुभव होगा

वर्तमान मीडिया पश्चिमी मानकों पर आधारित: आईआईएमसी निदेशक

- ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी की सातवीं पुण्यतिथि पर शांति सरोवर में मीडिया परिसंवाद का आयोजन

शिव आमंत्रण, रायपुर/छग। ब्रह्माकुमारीज़ के विधानसभा रोड स्थित शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर में मीडिया परिसंवाद आयोजित किया गया। विषय था- समाधानपरक मीडिया द्वारा समृद्ध भारत।

परिसंवाद के मुख्य अतिथि भारतीय जनसंचार संस्थान (आई.आई.एम.सी.) नई दिल्ली के महानिदेशक संजय द्विवेदी ने कहा कि आज की पत्रकारिता पश्चिमी मानकों पर टिकी है। हम अपनी परम्परा को भूला बैठे हैं। हमारी परंपरा लोकमंगल की है। इसलिए हमारी पत्रकारिता भी लोकमंगल के लिए है। अब हमें मीडिया का भारतीयकरण करना होगा। मीडिया को भारतीय परम्परा के अनुरूप और समाज को आध्यात्मिक आधार पर आगे बढ़ाना होगा। कोविड के दौरान मीडिया ने लोगों को जागृत करने का बहुत ही सराहनीय कार्य किया। नई दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार एवं फिल्मकार राजेश बादल ने कहा कि पहले पत्रकारिता के क्षेत्र में धर्म, जाति के आधार पर भेद नहीं था। आजादी के समय सकारात्मक पत्रकारिता थी किन्तु आज यह टुकड़ों में बंट गई है। राजनीति ऐसी हो गई है कि अब पत्रकारिता साफ-सुथरी नहीं रही। यह सोचना ठीक नहीं कि पत्रकार समाज को ठीक नहीं करेगा बल्कि समाज को उसे सुधारना होगा। पश्चिम की बुराइयां तो हमने अपना लीं, किन्तु राजनेताओं और समाज के दबाव में आकर हमने अपनी अच्छाइयों को गंवा दिया।

प्रयागराज से पधारीं धार्मिक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष ब्रह्माकुमारी मनोरमा दीदी ने कहा कि आजादी के आंदोलन में वैचारिक क्रांति लाने का श्रेय मीडिया को रहा है। आज की मीडिया बहुत बदल गया है। उसमें नकारात्मकता घर कर गई है। खासकर जो बातें टेलीविजन के माध्यम से कही जा रही हैं वह मानसिकता को प्रदूषित कर रहा है। समाज को किसी समस्या के बारे में बतलाना ठीक है, किन्तु साथ में मीडिया उसका समाधान भी बतलाए।

दैनिक भास्कर के राज्य संपादक शिव दुबे ने कहा कि हमारा समाज समाधान परक पत्रकारिता के लिए तैयार नहीं है। हममें से हरेक व्यक्ति समाज को बदलना चाहता है किन्तु यह भी चाहता है कि उसे सुधारने वाला व्यक्ति पड़ोसी के घर पैदा हो। लोग स्वयं में कोई सुधार करना नहीं चाहते हैं। मीडिया में घोटालों की खबर पढ़कर लोग सड़कों पर नहीं निकलते बल्कि चुप बैठ जाते हैं। राजनीति करने के लिए सिर्फ विपक्ष के लोग सड़कों पर निकलते हैं।

राज्य उपभोक्ता प्रतितोषण आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति गौतम चौरड़िया ने कहा कि समाज की दिशा और दशा को बदलने में मीडिया की अहम भूमिका होती है। मीडिया समाज का आइना होता है। मीडिया के माध्यम से समाज को जागरूक कर सकते हैं किन्तु अच्छे संस्कार कहां से लाएंगे। अच्छे इन्सान बनाने के लिए बचपन से अच्छे संस्कार देने की जरूरत है।

परिसंवाद को क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला दीदी, पूर्व मंत्री चन्द्रशेखर साहू और कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष शाहिद अली ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर दिवगंत पत्रकार रमेश नैयर, गोविन्द लाल वोरा, कमल दीक्षित आदि को दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मीडिया परिसंवाद में राजधानी रायपुर के अलावा जगदलपुर, धमतरी, महासमुंद, आरंग, अम्बिकापुर, बिलासपुर, रायगढ़, राजनांदगांव, दुर्ग और भिलाई सहित बड़ी संख्या में पत्रकारों ने भाग लिया।

राजयोग के बारे में जाना

शिव आमंत्रण, इंदौर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जोनल मुख्यालय न्यू पलासिया ओम शांति भवन में रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट-3150 हैदराबाद से पांच लोगों की टीम पधारी। टीम में शामिल आरटीएन पीपी. हरिहर प्रसाद मुल्लापुडी, आरटीएन पीपी. डॉ. वासुप्रदा कार्तिक गोदावरी, आरटीएन वसंत कुमार मुल्लापुडी ने निदेशिका राजयोगिनी बीके आरती दीदी से मुलाकात कर संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं को जाना। साथ ही टीम के सदस्यों ने राजयोग मेडिटेशन जानने, समझने और सीखने की इच्छा जताई। इस दौरान बीके दुर्गा बहन और बीके राकेश भाई ने टीम के सदस्यों को ओम शांति भवन में बने आध्यात्मिक संग्रहालय और उसमें छिपे रहस्यों के बारे में गहराई से बताया। इस दौरान सभी ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए राजयोग मेडिटेशन के लिए जरूरी बताया।

जो लोगों को शांति, संतुष्टता दे वही मूल्यनिष्ठ मीडिया

शिव आमंत्रण, इंदौर/मप्र। मूल्यनिष्ठ मीडिया वही है जो लोगों को शांति और संतुष्टता देता है। जो सूचनाएं बेचैनी देती हैं और शांति छीनने की कोशिश करती हैं, वे मूल्य नहीं है। राष्ट्र निर्माण में मीडिया की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिये संचार माध्यमों को बहुत सजग और सचेत होकर समाज में अपसंस्कृति के प्रचार को रोकने के लिये हस्तक्षेप करना चाहिये। उक्त विचार ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी की 7वीं पुण्य स्मृति पर राष्ट्र निर्माण और मीडिया विषय पर ज्ञानशिखर में आयोजित मीडिया परिसंवाद में महात्मागाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश शुक्ल ने कहे।

मप्र साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे, मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी, माउण्ट आबू से पधारे मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके शांतनु भाई, मधुबन न्यूज के प्रधान संपादक बीके कोमल भाई, कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता विश्व विद्यालय रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, नई दुनिया के प्रधान संपादक सद्गुरुशरण अवस्थी, दैनिक भास्कर के संपादक अमित मंडलोई, एसआर चैनल के संपादक प्रो. राजीव शर्मा, प्रजातंत्र के संपादक अनिल कर्मा ने अपने विचार रखे। माउण्ट आबू से पधारीं ब्रह्माकुमारी तुलसी बहन ने योग की गहन अनुभूति कराई। नवभारत के समूह संपादक क्रांति चतुर्वेदी और मीडिया विंग कोर कमेटी की सदस्य ब्रह्माकुमारी अनिता दीदी ने सभी का आभार माना। उज्जैन, देवास, रतलाम से भी पत्रकार शामिल हुए।

राजयोग से मन की शांति संभव: बीके कोमल

शिव आमंत्रण, ग्वालियर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के तहत प्रभु उपहार भवन माधौगंज सेवाकेंद्र पर 'समाधान पत्रकारिता से समृद्ध भारत की ओर' विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि माउंट आबू से पधारे मधुबन न्यूज और शिव आमंत्रण के संपादक, पीआरओ बीके कोमल भाई ने कहा कि पत्रकार आईना होता है जिसमें लोग अपनी शक्ल देखते हैं। जब आईना खुद अपनी शक्ल देखने लगे तो समझ लेना चाहिए कि बदलाव की घड़ी आ गई है। लोग पत्रकारों के आईने में देखकर ही अपना रास्ता तय करते हैं और जब कभी आईने पर धूल चढ़ जाती है तो लोग उलाहना देते हैं पर आईना किस कदर परेशान है उसके बारे में कोई सोचता नहीं है। आप सभी से कहना चाहूंगा कि थोड़ा समय निकालकर राजयोग ध्यान का अभ्यास अवश्य करें तो निश्चित मन को शांत और जीवन को बेहतर बना सकते है।

लश्कर ग्वालियर की इंचार्ज बी.के. आदर्श दीदी ने सभी पत्रकारों का स्वागत किया। बीके तुलसी बहन ने सभी पत्रकारों को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया।

इस दौरान वरिष्ठ पत्रकार डॉ. केशव पांडेय ने कहा कि अपने मन में कभी मैं की भावना नहीं रखें, हम को लेकर चलें। सुरेश दंडोतिया ने कहा कि समाज के हर वर्ग की तरह मीडिया में भी गिरावट आई है। बी.के. वेंकटेश सहित शहर के गणमान्य वरिष्ठ पत्रकार मौजूद रहे। संचालन बीके प्रहलाद ने किया।

बीके यशवंत उत्कृष्ट उद्यमी से सम्मानित

शिव आमंत्रण, इंदौर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर जोनल मुख्यालय ओम शांति भवन से जुड़े वरिष्ठ राजयोगी बीके यशवंत गौर को युवा उत्कृष्ट उद्यमी पुरस्कार से नवाजा गया। देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय के सभागृह में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कॉलेज के विद्यार्थियों को व्यापार में सफल होने के टिप्स बताते हुए कहा कि कोई भी क्षेत्र हो उसमें आध्यात्म के समावेश से हमारी कार्यक्षमता और माइंड पावर बढ़ जाता है। मेरी सफलता का राज राजयोग ध्यान ही है। कुलपति रेनू जैन सहित शहर के जाने-माने उद्योगपति मौजूद रहे।

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य 150 रुपए, तीन वर्ष 450
आजीवन 3500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिजीवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 9414172596, 9413384884
Email shivamantran@bkivv.org
View letest news shivamantran.com

समर्पण समारोह] ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल के सुख-शांति भवन में आयोजन

जैसा कर्म करेंगे, वैसा फल मिलेगा: मुख्यमंत्री

» सुख-शांति भवन सेवाकेंद्र के नवनिर्मित अनुभूति सभागार का उद्घाटन सीएम शिवराज सिंह चौहान ने किया।

» संयम के पथ पर चलते हुए पवित्रता का व्रत लेकर अपना जीवन ब्रह्माकुमारीज़ में समर्पित करने वालीं नर्स बीके ममता, डॉ. बीके प्रियंका, डॉ. बीके दिव्यानी का सीएम शिवराज सिंह चौहान से स्वागत किया।

» शिव आमंत्रण, भोपाल/मप्र। हमारे पिताजी धार्मिक विचारों वाले थे। इसीलिए बचपन से ही हमारे ऊपर अच्छे संस्कार हुए। मैंने बचपन से ही गीता का अध्ययन शुरू किया था। उससे यह समझ में आया कि कर्म ही सब कुछ है। हमें कर्म के ऊपर ध्यान देना चाहिए, उसके फल के बारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिए। मध्यप्रदेश शासन ने कई जनसामान्य के लिए कई प्रकार की योजनाएं शुरू की है। प्रयास करना हमारा काम है। निंदा-स्तुति, लाभ-हानि, मान-अपमान सब परिस्थितियों में स्थिति समान रहे, यही गीता की शिक्षा है। जैसा इस भवन का नाम है- सुख शांति भवन और सभागार का नाम है अनुभूति सभागार। यहां आकर मुझे सच्चे सुख और शांति का अनुभव हो रहा है। शांति तो अंदर की स्थिति है। इसे बाहर का शोर प्रभावित नहीं कर सकता।

यह कहना था मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का। अवसर था नवनिर्मित अनुभूति सभागार के उद्घाटन एवं श्रीमद्भगवत गीता पर आधारित कार्यक्रम का। अतिथियों ने पट्टिका का अनावरण करके विधिवत सभागार का उद्घाटन किया। चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग, विधायक रामेश्वर शर्मा, ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती दीदी, अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ। अतिथियों का सुख शांति भवन नीलबड़ की डायरेक्टर बीके नीता दीदी ने स्वागत किया। मेजर जनरल ऋतुराज रैना, सुपरस्टार सिंगर फेम मास्टर प्रत्यूष ने अपने मनमोहक गीत द्वारा सबका मन मोह लिया। गीता वृतांत की पुनरावृत्ति हो रही है इस विषय की भूमिका प्रो. डॉ. दिलीप नलगे ने रखी। मुख्य वक्ता बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि गीता ज्ञान वर्तमान समय के लिए अत्यंत आवश्यक है। गीता में वर्णित धर्म ग्लानि का समय शुरू हो चुका है। परमात्मा फिर से यह गीता ज्ञान ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से सबको दे रहे हैं। यहां पर दिया जाने वाला ज्ञान ऐसा व्यावहारिक गीता ज्ञान है जिससे मनुष्य के अंदर सकारात्मक परिवर्तन आता है। उसके दैवी गुण जागृत होने लगते हैं। वह देवत्व की ओर अग्रसर होने लगता है। बीके जयंती दीदी द्वारा सभी को राजयोग की अनुभूति कराई गई।

संस्थान के कार्यकारी सचिव और शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि सभागार से भविष्य में अनेक आत्माओं को परमात्म ज्ञान मिल सकेगा।

समर्पण करने वालीं चारों ब्रह्माकुमारी बहनों का मुख्यमंत्री ने स्वागत-सम्मान किया। संचालन बीके रामकुमार ने किया। आभार दिल्ली से पधारे बीके संजीव ने माना। कार्यक्रम में भोपाल जोन के सभी सेवाकेंद्रों से बीके भाई-बहनें बड़ी संख्या में पधारे।

मप्र के कृषि मंत्री और सांसद, विधायक पहुंचे बैतूल सेवाकेंद्र

» शिव आमंत्रण, बैतूल/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्य विधाता भवन में मप्र के कृषि मंत्री कमल पटेल, सांसद डीडी उइके, विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे एवं जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार पहुंचे। इस दौरान सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी और नीलबड़ भोपाल से पधारीं सुख-शांति भवन की निदेशिका बीके नीता दीदी ने सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। इस दौरान बीके मंजू दीदी ने सभी अतिथियों को संस्था द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देते हुए राजयोग मेडिटेशन पर ज्ञान चर्चा की। वहीं ब्रह्माकुमारी सुनीता दीदी ने सभी को ईश्वरीय प्रसाद देकर माउंट आबू पधारने का दिया निमंत्रण। इस दौरान सांसद ने माउंट आबू क जिक्र करते हुए कहा कि आबू पर्वत अद्भुत स्थान है। हाल ही में मुझे वहां जाने का अवसर मिला। वहां के वातावरण में गजब की शांति है। माउंट आबू देखने लायक जगह है।

यहां आपको जीवन में नई दिशा देने का समय मिला है

» शिव आमंत्रण, शाजापुर/मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव वरदानी धाम द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के बैनर तले मेडिकल प्रभाग के अंतर्गत जिला जेल शाजापुर में कैदी भाइयों के लिए व्यसन मुक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारी पूनम दीदी ने कहा कि व्यसन के कारण आज संसार में कई प्रकार के अपराध हो रहे हैं। नशे के कारण कई वाहनों के एक्सीडेंट हो जाते हैं। व्यसन का शौक दुःखी होकर मौत होना है। आप इस समय जेल में नहीं बल्कि सुधार ग्रह में हैं। यहां आपको स्वयं को सुधारने का पूरा अवसर दिया जाता है। यहां से जब आप बाहर जाएं और यदि किसी व्यसन का शौक हो तो पूरी तरह से परिवर्तित होकर जाएं। अपने जीवन से बुराइयों दुर्गुणों एवं व्यसनों को हमेशा के लिए दूर कर दें क्योंकि इन्ही व्यसनों के कारण ही परिवारों में समाज में कई प्रकार के अपवाद पैदा हुए हैं और इन्हीं नशीली चीजों के कारण संसार में कई अपराधों को जन्म दिया है। ब्रह्माकुमारी चंदा बहन ने कहा कि यदि आप प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करेंगे तो निश्चित ही सभी प्रकार की बुराइयों व्यसनों से दूर हो जाएंगे। संचालन बीके दीपक ने किया। मनोहर नायक ने अपना अनुभव सुनाया। जेलर गौतम साहब, उप जेलर सुनील ने बीके सदस्यों का स्वागत किया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

मन का मौन

» शिव आमंत्रण, आबू रोड। सूचनाओं की बाढ़ से मन की धारा अनचाही दिशा में बह रही है। हम बिना सोचे-समझे मन के सागर में व्यर्थ की गागर भरते जा रहे हैं। पल-पल आते नोटिफिकेशन पर अनचाहे ही अंगुलियां यूं ही बढ़ जाती हैं, भले वह जानकारी उपयोगी है या नहीं, यह मायने नहीं रखता। नकारात्मक सूचनाओं से मन इतना लद गया है कि वह इनके बोझ से कराह रहा है, इनका भार ढोते-ढोते थक गया है, कमजोर हो गया है। परिणामस्वरूप आज तेजी से याददाश्त की कमी और भूलने की बीमारी आम समस्या बन गई है।

यहां विचारणीय प्रश्न है कि हम शरीर के लिए व्रत तो रखते हैं, क्या मन का भी व्रत रखते हैं? रोज कुछ घंटे सूचनाओं के सागर से दूर रह पाते हैं? कुछ समय मन को आराम देने, रिलेक्स होने के लिए भी देते हैं? सप्ताह में एक दिन डिजिटल वर्ल्ड, सोशल मीडिया से दूर रह पाते हैं? मन के मौन के लिए भी कोई कार्ययोजना बनाई है?

- सूचनाओं को सीमित करना होगा और जरूरी सूचनाओं को ही ग्रहण करने की गाइडलाइन बनाना होगी।

मन से जुड़े यह वह प्रश्न हैं जिन्हें जानना और समझना हर किसी की जरूरत है। मन ही जीवन का वह केंद्रबिंदु है जहां से समस्याओं की रचना होती है। समस्याएं मन में बुनी गई वह रचना है जिनके रचनाकार हम खुद हैं। मन को साधने के प्रति जितने सजग, समझदार और सचेत रहेंगे, जीवन उतना ही आनंद और सुकून भरा होगा। दुनिया की तमाम समस्याओं की जड़ और उत्पत्ति का मूल कारण विकृत मानसिकता और अस्वस्थ मन है। यदि उसकी शक्ति को बढ़ाना है, धार देना है तो पल उसकी देखभाल के लिए देना होंगे। जब हम उसका ख्याल रखना सीख जाएंगे, एक सकारात्मक दिशा देने में सक्षम हो जाएंगे तो एक समय के बाद मन को उस दिशा में चलने की आदत बन जाती है। मन में आने वाले हर विचार का परीक्षण करें और उसके समुचित पहलुओं को देखते हुए मूर्तरूप दें।

मन को मारें नहीं सुधारें: मन को मारें नहीं सुधारें। जो बातें या चीजें हमारे लिए नुकसानदायक हैं, हमें तकलीफ देती हैं उनसे दूर रहने के लिए मन को गाइड करें। उसे सुझाव दें कि कैसे हम उससे दूर रहकर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। मन में जब भी नकारात्मक और हिंसक विचार उत्पन्न होता है तो अंतर्मन उस विचार के सामने एक सकारात्मक विचार भी देता है लेकिन जब हम विचारों के चुनाव में लापरवाह, गैरजिम्मेदार होते हैं तो नकारात्मक विचार स्वीकार कर लेता है। जब निरंतर एक तरह के विचार नकारात्मक या सकारात्मक विचारों की धारा मन में प्रवाहित रहती है तो मन को उस धारा के साथ चलने की आदत बन जाती है। कुछ समय बाद उसमें अंतर्मन रम जाता है।

मन का भोजन है ध्यान: ध्यान, राजयोग मेडिटेशन मन का भोजन है। इसमें यदि मौन को समाहित कर लिया जाए तो सोने पर सुहागा। मन को जब आत्म स्वरूप में स्थित कर परमात्म स्वरूप पर केंद्रित करते हैं तो अंतर्मन की शक्तियां पुनः जागृत होने लगती हैं। बिना ध्यान के मन का स्वास्थ्य और संतुलन संभव नहीं है। ध्यान और मन एक-दूसरे के पूरक हैं।

मौन से ही निकलते हैं नए सिद्धांत: ज्ञानी पुरुष मन के मौन को प्राथमिकता देते हैं। एकांत में जब एक विचार को लेकर मौन के सागर में गोता लगाते हैं तो अंतर्मन की गुफा से नए-नए विचारों का उद्भव होता है। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए ध्यान, मां प्रकृति का सान्निध्य, सद्साहित्य या या धर्मग्रंथ का नियमित अध्ययन, एकांत में मनन-चिंतन वह औजार हैं जो मन की सोई शक्तियों को पुनः जागृत कर शक्तिशाली मन का निर्माण करने की दिशा में सबसे कारगर हैं। इसके लिए हमें सूचनाओं को सीमित करना होगा और जरूरी सूचनाओं को ही ग्रहण करने की गाइडलाइन बनाना होगी। जैसे ही मन में नवीन या रचनात्मक विचार आए तो उसे डायरी में नोट करना न भूलें। इन उपायों से निश्चिततौर पर मन हमारे नियंत्रण में आ जाता है और हम उसके मालिक बन उसे आदेश देने के काबिल हो जाते हैं।

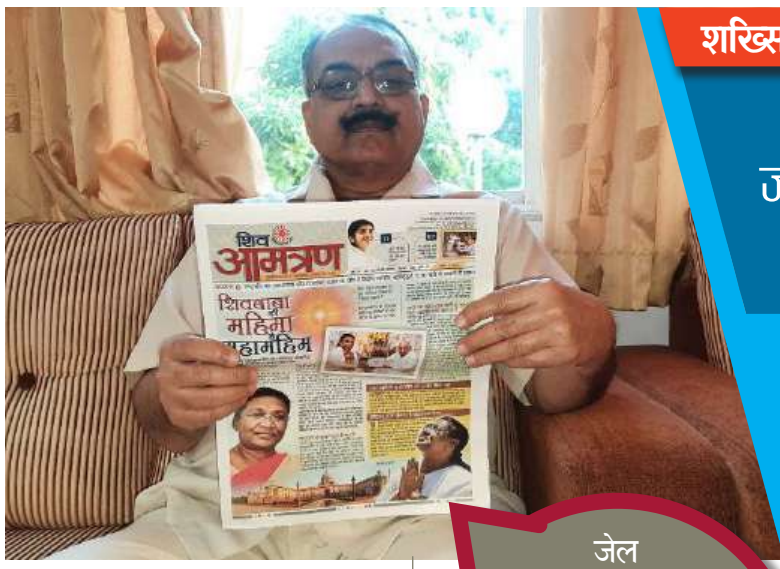

शख्सियत

समाज को सही दिशा में ले जाना है तो ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान ही एकमात्र रास्ता है

कैप्टन सुशील कुमार पांडे

सेवानिवृत्त डीआईजी जेल कारागार, उप्र

समाज को सही दिशा में ले जाना है तो ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान ही एकमात्र रास्ता है। ये ज्ञान इंसान को इंसान बनाता है। खुद के अंदर छिपी शक्तियों, प्रतिभा को निखारकर हमें श्रेष्ठ इंसान बनाता है। राजयोग मेडिटेशन को जबसे मैंने अपनी लाइफ में शामिल किया है मेरा जीवन ही बदल गया है। मन में असीम धैर्य, सुकून और शांति आ गई है। बातों पर तुरंत रिएक्ट नहीं करता हूं। सोचो, समझो फिर बोलो पर अमल करता हूं।

जेल कारागार के सेवानिवृत्त डीआईजी कैप्टन सुशील कुमार पांडे के योग, ध्यान और आध्यात्म के अनुभव से हजारों जवान ले रहे हैं प्रेरणा

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । डॉ. संपूर्णानंद कारागार प्रशिक्षण संस्थान में वर्ष 2014 में मैं डायरेक्टर के रूप में सेवाएं दे रहा था। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आया। यहां आकर मैंने देखा कि इतनी शांति, पवित्रता, स्वच्छता और बिना तनाव के 25 हजार लोगों का भोजन बन रहा है। कोई किसी को निर्देश नहीं दे रहा, सब शांति से अपनी-अपनी सेवा कर रहे हैं। न कोई परेशान दिख रहा न ही यह चिंता कि इतना भोजन कैसे बनेगा। यह सब देखकर मैं अचंभित रह गया क्योंकि मैं तीन हजार लोगों का ही भोजन बनवाने में तनाव में आ जाता था, जबकि यहां 25 हजार लोगों का भोजन आराम से बन रहा था। संस्थान में बहुत देखरेख के बाद भी कभी सब्जी कम पड़ जाती तो कभी नमक कम रहता। कभी कुछ सामान कम पड़ जाता। वहीं माउंट आबू में इतनी विशाल भोजनशाला में भोजन बनाने वालों की स्थिति इसके विपरीत शांतिमय थी। आमतौर पर घरों में महिलाएं भोजन बनाती हैं, जबकि यहां भाई भोजन बनाते हैं और बहनें भोजन करती हैं। इतनी व्यवस्थित, सिस्टेमेटिक, हाई तकनीक से लैस, भोजनशाला मैंने पहली बार देखी।

यह कहना है उप्र, लखनऊ के जेल कारागार के सेवानिवृत्त डीआईजी कैप्टन सुशील कुमार पांडे का। उन्होंने शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में अपने जीवन से जुड़े योग, ध्यान और आध्यात्म के अनुभवों को सांझा किया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान लेने के बाद उनके जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए उसे उन्होंने विस्तार से बताया।

माउंट आबू में आकर पूरी तरह प्याज-लहसुन छूट गया

तीन दिन माउंट आबू में रहे और आध्यात्मिक क्लासों में यहां बताया गया कि कैसे हमारे अन्न का प्रभाव मन पर पड़ता है। आध्यात्मिक व्यक्ति का भोजन कैसा होना चाहिए। भोजन और मन का संबंध। इन बातों को गहराई से जानने-समझने के बाद मैंने प्याज-लहसुन छोड़ने का संकल्प लिया क्योंकि ये चीजें तामसिक हैं। शुरुआत में तो घर में ही विरोध का सामना करना पड़ा। बाद में धीरे-धीरे सब नॉर्मल हो गया।

मन शांत रहता है, साक्षी भाव से घटनाओं को देखते हैं

पहले जीवन में कुछ घटित होता तो परेशान हो जाता था। क्या, क्यों जैसे सवाल मन में आते लेकिन इस ज्ञान को लेने के बाद अब जीवन के प्रति, घटनाओं और परिस्थितियों के प्रति साक्षी भाव आ गया है। समस्याओं में विचलित नहीं होता हूं। सब परमात्मा पर छोड़ देता हूं। क्योंकि हमारे लिए सबसे बेस्ट क्या है, यह प्लानिंग हमारे परमपिता ने कर रखी है।

3.30 बजे से करता हूं ध्यान

पहले जहां सुबह देरी से सोकर उठता था वहीं अब ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे से दिनचर्या शुरू हो जाती है। रोज सुबह एक घंटा परमात्मा का ध्यान करता हूं। साथ ही रोज आध्यात्मिक ज्ञान मुरली सुनना हूं। इससे दिनभर के लिए एक गाइडलाइन मिल जाती है कि आज हमारी मानसिक अवस्था कैसी रखनी है। हम जीवनभर अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखते हैं कि क्या कब खाना चाहिए और क्या नहीं, जबकि जो चैतन्य शक्ति आत्मा इस शरीर को चलाती है, उसका कभी ध्यान ही नहीं देते हैं। इन बातों का कभी ख्याल ही नहीं करते हैं कि हमें क्या, कब और कैसे सोचना है। हमारी मन की अवस्था आज कैसी रहनी चाहिए। मैं अपने मन को आज सद्विचारों से प्रेरित रखूंगा। इन बातों का ज्ञान हमें राजयोग मेडिटेशन सीखने के बाद ही होता है। यदि जीवन में परिवर्तन नहीं आ रहा है तो व्रत, उपवास, पूजा-पाठ का कोई मतलब नहीं रह जाता है। यह चिंतन का विषय है। आत्म चिंतन-परमात्म चिंतन ही उन्नति का आधार है।

राजयोग के प्रयोग..... राजनीति-

आध्यात्मिक महावाक्यों के श्रवण से समस्याओं का सामना करना संभव

बचपन से ही मुझे लाल लाइट दिखती थी। मेरी मां के निधन के बाद में बहुत तनाव में आ गई थी और ब्रह्माकुमारीज सेंटर ढूंढ रही थी। मुझे विश्वास था कि वहां जाकर मेरी तकलीफ कुछ कम हो सकती है। पहले ही दिन जब सेंटर गई तो असीम शांति की अनुभूति हुई। ब्रह्माकुमारीज से जुड़ने और यहां का ज्ञान लेने के बाद मेरा पूरा जीवन बदल गया। एक महीने के अंदर ही मैं मां के जाने का दुःख भूल गई और जीवन जीने का तरीका बदल गया। मेरी सोच बदल गई। मेरा मानना है कि हम पांच विकारों पर तभी विजय प्राप्त कर सकते हैं जब रोज ब्रह्माकुमारीज सेंटर जाएंगे। रोज मुरली सुनने से ही हमारे अंदर पॉजीटिव एनर्जी आती है। इस ज्ञान से मैं इतनी परिपक्व बन गई कि जब 2016 में मेरे पिताजी ने शरीर छोड़ा तो बिल्कुल दुख नहीं हुआ, क्योंकि मैं बहुत परिपक्व बन गई थी। मेरा सभी से अनुरोध है कि हमने पूरा जीवन सभी के लिए जीया है। कम से कम रोज एक घंटा अपने लिए भी निकालें। अपने लिए भी जीएं। हम समस्याओं से तभी सामना कर सकते हैं जब रोज आध्यात्मिक महावाक्यों का श्रवण करें। राजयोग मेडिटेशन की बदौलत जीवन में विपरीत परिस्थितियां आईं लेकिन मन को कभी कमजोर नहीं होने दिया। इस ज्ञान से मुझे यह सीख मिली कि यदि कोई हमारे साथ बुरा बर्ताव कर रहा है तो हमें उनके प्रति रहम का भाव रखना चाहिए, क्योंकि कहीं न कहीं वह कमजोर हैं।

– **सुनीता बंसल,** सदस्य, राज्य महिला आयोग, दूरदर्शन लखनऊ, विभिन्न समाचार पत्रों में रिपोर्टिंग, मीडिया की जिम्मेदारी संभाली, उप्र

खिलाड़ी-

राजयोग की बदौलत इंटरनेशनल टूर्नामेंट में मिली सफलता

- **36वीं रैंकिंग प्राप्त इंटरनेशनल क्रॉसमिंटन प्लेयर आशीष चौधरी का दिल को छू लेने वाला अनुभव**

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । ब्रह्माकुमारीज़ में सात दिन का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद तो जैसे मेरी जिंदगी को पंख लग गया। मुझे यह एहसास हो गया कि अब मैं अपने मुकाम पर पहुंच सकता हूं। यह कहना है इंटरनेशनल क्रॉसमिंटन प्लेयर और वर्ल्ड में 36वीं रैंकिंग प्राप्त आशीष चौधरी का। उन्होंने बताया कि मां पहले से ब्रह्माकुमारी दीदियों के संपर्क में थीं। वह राजयोग का भी अभ्यास करती थीं। मुझे भी राजयोग कोर्स करने की प्रेरणा दी। दीदियों ने मुझे थॉट्स पॉवर, ऑफ हीलिंग के बारे में बताया। इसके बाद मैं ब्रह्ममुहूर्त में सुबह 4 बजे से राजयोग ध्यान करने लगा। इससे कुछ ही समय में गेम्स में मेरा फोकस बढ़ गया। साथ ही नेशनल में बेहतर परफॉर्मेंस किया तो इंटरनेशनल के लिए सिलेक्शन हुआ। माउंट आबू पांडव भवन में ब्रह्मा बाबा और मम्मा का हाथ में बैडमिंटन लिए फोटो देखा तो उस दिन से मेरे अंदर एक अलग ही आत्म विश्वास जाग गया। तभी मैंने बाबा के कमरे में संकल्प किया कि अब मैं कुछ करके ही दिखाऊंगा। राजयोग से कार्यक्षमता और शारीरिक क्षमता में भी विकास हुआ। इसके बाद शिव बाबा से मन की बात कही और पिताजी से एक साल का मौका मांगा। 2018 में मॉरीशस में हुए ओपन टूर्नामेंट में मैंने भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया। मॉरीशस में 2018 में हुए टूर्नामेंट में मेरा पैर डैमेज हो गया। लेकिन मैं घबराया नहीं और ये बात किसी को बताई भी नहीं। मैंने तुरंत शिव बाबा को याद किया और हीलिंग मेडिटेशन टेक्नीक यूज की। परमात्मा से शक्ति लेकर उसे चार्ज किया और गेम्स को पूरा किया। इसके बाद मैंने सिंग्लस और डबल्स मैच में मेडल जीते।

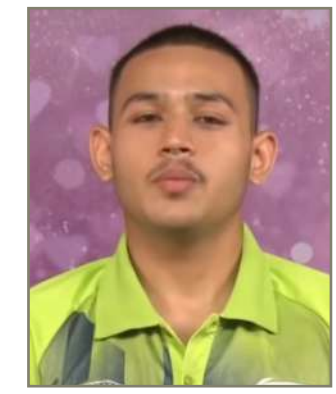

डॉक्टर-

परमात्मा पर ट्रस्ट से उनकी मौजूदगी और पावर का होने लगता है एहसास

» शिव आमंत्रण, आबू रोड । बात वर्ष 2014 की है। मेरे सिर में असहनीय दर्द हुआ तो डॉक्टर को दिखाया। जांच के बाद पता चला कि ऑप्टिक न्यूराइटिस नाम की दिक्कत जो यंग फीमेल में कॉमन होती है। इसके लिए उन्होंने न्यूरोलॉजिस्ट के पास रैफर किया। न्यूरोलॉजिस्ट ने हॉस्पिटल में एडमिट कराकर कई सारे टेस्ट किए। पांच दिन के बाद घर आई और तनाव में आ गई। इसके एक साल बाद दाहिनी आंख में कोलाइटिस की दिक्कत आ गई। वहीं जून 2019 में दोबारा बायीं आंख में कोलाइटिस हो गया। इससे मेरी रोशनी इतनी कम हो गई कि यदि राइट आई बंद करती थी तो लेफ्ट आई से सिर्फ एक स्पॉट ऑफ लाइट ही दिखता था। फिर मुझे हॉस्पिटल में एडमिट किया गया। एक दिन रात में अचानक तबीयत बिगड़ गई और परिवार वालों ने एडमिट कराया। मुझे यह फील होने लगा था कि अब मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। लेकिन इस दौरान मैं हर पल शिव बाबा को ही याद करती रही। मैं यह इमेजन करती रही कि हर पल बाबा मेरे साथ हैं। उनकी शक्तिशाली किरणें मुझ पर पड़ रही हैं और मैं ठीक हो रही हूं। मेरा मानना है कि जब हम परमात्मा पर ट्रस्ट करते हैं तो हमें उनकी मौजूदगी और उनकी पावर का एहसास होने लगता है। मेरी दोनों आंखें ठीक हो गईं। राजयोग से आज जिंदगी में बहार आ गई है।

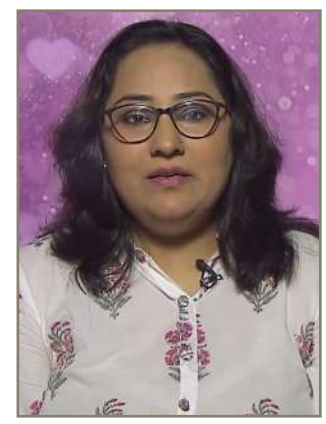

– **डॉ. दीप्ति छाबड़ा,** फीजियोथैरेपिस्ट, जनकपुरी, दिल्ली

■ RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 October 2022
■ स्वामी: राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन ■ प्रकाशक, संपादक व मुद्रक : ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित।